GOVERNMENT OF TAMIL NADU

Hindi Reader

हिन्दी रीडर

Class - IX

नौवीं कक्षा

Department Of School Education

Untouchability is Inhuman and a Crime

Preface.indd 1 23-06-2018 10:55:52

Government of Tamil Nadu

First Edition - 2018

Reprint - 2019, 2020, 2021, 2022, 2023, 2024

(Published under Uniform System of School Education Scheme in Trimester Pattern)

Content Creation

State Council of Educational Research and Training

© SCERT 2018

Printing & Publishing

Tamil NaduTextbook and Educational Services Corporation

www.textbooksonline.tn.nic.in

Preface.indd 2 23-06-2018 10:55:52

प्रस्तावना

नई सोच, नई आशाओं के साथ पुस्तक वर्ग १, वर्ग ६, वर्ग ९ और वर्ग ११ का सृजन किया गया है।

आगे के प्रतिस्पर्धा एवं संघर्ष के वातावरण में बच्चों का सम्यक शारीरिक एवं मानसिक विकास बहुत आवश्यक है ताकि वे भविष्य में आनेवाली चुनौतियों का मुकाबला आसानी से कर सकें। उनके लिए ज्ञान विज्ञान की बातें उतनी ही आवश्यक है जितनी साहित्य और कला संबंधी जानकारी देश विदेश में हो रही घटनाओं से परिचित होना अगर आवश्यक है तो जीवन जीने की व्यावहारिक कला में निपुण होना भी उतना ही आवश्यक है। इन बातों को ध्यान में रखकर ही इस श्रृंखला का सृजन किया गया है। छात्र छात्राओं का सर्वांगीण करना है।

श्रृंखला तैयार करते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखा गया है।

- पाठों की प्रस्तुति के लिए विधा , कौतूहल और भाषा की सरलता आवश्यक है, यही समझते हुए ऐसे पाठों का चयन किया गया है जो बच्चे की जिज्ञासाओं एवं रूचियों को बढावा दे सके। साहित्य की विभिन्न विधाओं से अवगत कराने हेतु कविताएँ, कहानियाँ, लेख, यात्रा वृतांत, हास्य कथा, एकांकी, साक्षात्कार, आत्मकथा, डायरी आदि को सम्मिलित किया गया है।
- पर्यावरण संरक्षण आज के युग की सबसे बडी माँ है। बच्चों को प्राथमिक कक्षाओं से ही पर्यावरण की समस्याओं एवं उसके संरक्षण के प्रति जागरूकता लाने के लिए पर्यावरण संबंधी कहानियों एवं कविताओं के साथ साथ समाचार पत्रों में छपे लेख, पोस्टर आदि को भी सम्मिलित किया गया है।
- बच्चों को पुस्तक के केंद्र में रखने के कारण ऐसे पाठों को ही चुना गया ताकि खेल खेल में, मनोरंजन करते हुए अपनी बात बच्चों तक पहुँचा सकें। कक्षा का वातावरण बोझिल न हो, इसलिए रूचिकर पाठों के साथ साथ चुटकुले, शब्द पहेली, चित्रकथाएँ आदि भी दिए गए है।
- समालोचनात्मक सोच, समस्या समाधान, प्रभावशाली संप्रेषण तथा रचनात्मक प्रवृत्ति जैसे कौशलों का विकास करने वाले कार्यकलापों को विशेष रूप से सम्मिलित किया गया है।
- भाषा ज्ञान के अंतर्गत व्याकरण को सम्मिलित कर लिया गया है ताकि वह अलग अलग न होकर उसके साथ जुडा रहे।
- मौखिक वार्तालाप, लिखित कार्य, समूह कार्य, संवाद प्रदर्शन आदि को ध्यान में रखते हुए अभ्यासों का निर्माण किया गया है। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन करते समय इस विविधता को ध्यान में रखा जाए। मूल्यांकन करते समय प्रश्न कल्पनाशीलता को उभारें, विषयवस्तु को विस्तार प्रदान करने वाले हों, पाठ्यपुस्तक की परिधि से बाहर वृहतर परिधि को समेटने वाले हों, इन सभी विंदुओं को ध्यान में रखकर ही अभ्यास में सभी प्रकार के प्रश्नों का समावेश किया गया है।

सीखने के वातावरण को आनंदमयी बनाए रखना अध्यापकों की बहुत बडी जिम्मेदारी है। कक्षा में विद्यार्थियों के संप्रषण को महत्व दें। बच्चे अपनी बात बोलते समय न हिचकें। उन्हें बोलते अथवा लिखते समय जो भी सहायता चाहिए, प्रदान करे ।

बच्चों के मनोविज्ञान, उनके मानसिक क्षितिज को समझते हुए, उनके जगत से तारतम्य बनाते हुए मेरी ओर से प्रयास है।

Preface.indd 4 23-06-2018 10:55:53

देशीयगीतम्

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिन्धु गुजरात मराठा
द्राविड उत्कल बङ्गा
विन्ध्य हिमाचल यमुना गङ्गा
उच्छल जलधि तरङ्गा
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जन गण मङ्गल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे !

महाकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरः

अस्पृश्यत्वम् अपचारः
अस्पृश्यत्वम् अपराधः
अस्पृश्यत्वम् अमानवधर्मः



Preface.indd 5 28-01-2019 10:22:39

तमिल माता की वंदना

(तमिलताय वाळ्तु)

नीरारूम कडलुडुत्त निलमडन्दै केळिलोळुगुम
सीरारूम वदनमेन तिगळ भारत खंडमिदिल,
तेक्कण।मुम अदिर्चिरन्द द्राविडनल् तिरूनाडुम
तकिकचिरू पिरैनुदलुम तरितनरून् तिलकमुमे
अत्तिलक वासनैपोल अनैत्तुलगुम इन्बमुर
एत्तिशैयुम पुगळ मण।क्क इरून्द पेरूंद्तमिलअणंगे!
तमिलअणंगे!
उन सीर इलमै तिरम वियन्दु
सेयल मरन्दु वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!
वाळ्त्तुदुमे!

'मनोनमणि।यम' पे. सुन्दरम पिल्लै

Preface.indd 7 23-06-2018 10:55:54



राष्ट्रिय प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है।

सब भारतवासी मेरे भाई-बहन है।

मैं अपने देश से प्रेम करता/करती हूँ।

इसकी समृद्ध एवं विविध संस्कृति पर मुझे गर्व है।

मैं सदा इसका सुयोग्य अधिकारी बनने का प्रयत्न करता/करती रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने माता-पिता, शिक्षको एवं गुरुजनो का सम्मान करूँगा/करूँगी और प्रत्येक के साथ विनीत रहूँगा/रहूँगी।

मैं अपने देश और देशवासियों के प्रति सत्यनिष्ठा की प्रतिज्ञा करता/करती हूँ।

इनके कल्याण एवं समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।



Preface.indd 8 23-06-2018 10:55:55

विषय सूची

TERM - I

		पृष्ट
1.	तिरुक्कुरल (पद्य)	01
2.	शुभकामना (पद्य)	04
3.	चाह (पद्य)	07
4.	स्वच्छता और व्यायाम (गद्य)	09
5.	भारतरत्न कामराज (गद्य)	13
6.	हार की जीत (कहानी)	16
7.	निबंध	21
8.	व्याकरण	24

TERM - II

9.	मधुमय देश हमारा (पद्य)	38
10.	तुलसी के दोहे (पद्य)	41
11.	यंत्र मानव (गद्य)	43
12.	हमारी राष्ट्रभाषा (गद्य)	45
13.	गूँगे (कहानी)	51
14.	निबंध	58
15.	व्याकरण	59

TERM - III

16.	माँ (पद्य)	64
17.	ठुकरा दो या प्यार करो (पद्य)	67
18.	कृत्रिम उपग्रह (गद्य)	70
19.	आओ पेड़ लगाएँ (गद्य)	72
20.	छोटा जादूगर (कहानी)	74
21.	काबूलीवाला (कहानी)	79
22.	निबंध	88
23.	निबंध	89
24.	व्याकरण	90
25.	अनुवाद अभ्यास	93

Preface.indd 9 23-06-2018 10:55:55

Hindi Reader

STANDARD - **IX**

Preface.indd 10 23-06-2018 10:55:55

1 पद्य तिरुक्कुरल

कवि परिचय



तिरुवल्लुवर का जन्म तमिलनाडु की राजधानी मद्रास (चेन्नई) शहर के मैलापूर नामक स्थान में करीब 2000 वर्ष पहले हुआ था। नायनार, देवर, प्रथम कवि, दैव कवि आदि अन्य नामों से भी वे पुकारे जाते हैं। इनकी प्रसिद्ध कृति 'तिरुक्कुरल' है। मानवीय जीवन के लिए उपयोगी अनेक तत्व इस में विद्यमान है। इसके पठन, पाठन एवं पालन से मानसिक अंधकार दूर होता है। इस ग्रंथ को सभी धर्मों के लोग मानते हैं। इसमें कुल '133' अधिकारम' है और प्रत्येक 'अधिकारम्' में दस-दस 'कुरल' हैं। प्रत्येक 'अधिकारम' में जीवन के लिए उपयोगी एक नैतिक मूल्य दिये गये है। प्रस्तुत छः 'कुरल' तिरुवल्लुवर कृत तिरुक्कुरल के पाँच विभिन्न 'अधिकारम्' लिये गये हैं।

वृष्टि

1. जल ही जग का प्राण है, जल बिना सब निःसार।
   वृष्टि बिना संभव नहीं, जन-जन सदाचार।।

Unit 1.indd 1 23-06-2018 10:56:23

सद्गृहस्थ

2. नियमों के अनुसार जो रहता नित्य गृहस्थ।

पूजा जाता लोक में, देव तुल्य स्वर्गस्थ।।

प्रेम

3. मेरा-मेरा कहते वे जिनमें नहीं स्नेह।

प्रेमी करते भेंट है, अस्ति चर्ममय देह।।

संतान

4. देन पिता को पुत्र को, मुख-मुख निकले बोल।

किस तप का है सुफल यहै, पुत्र रत्न अनमोल।।

बुराई - त्याग

5. लज्जित कर दो दुष्ट को, उसका कर उपकार।

सब कुछ जाओ भूल फिर, यही सुजन प्रतिकार।।

कृतज्ञता

6. ठीक नहीं है भूलना, जीवन भर, उपकार।

किंतु उचित है भूलना, उसी घड़ी अपकार।।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. जन-जन में सदाचार किस से प्राप्त होता है?
2. वृष्टि महिमा का सार क्या है?
3. जल का महत्व समझाइये?

Unit 1.indd 2 23-06-2018 10:56:23

4. नियम -पालन से गृहस्थ लोक में क्या प्राप्त करता है?

5. नियमानुसार रहनेवाले लोग कैसे पूजे जाते हैं?

6. सद्‌गृहस्थ का लक्षण क्या है?

7. प्रेमी का भेंट कैसा होता है?

8. प्रेम की महिमा क्या हैं?

9. स्नेह का परिभाषा दीजिए।

10. अनमोल रत्न क्या है?

11. मुख-सुख का लक्षण क्या है?

12. संतान - महिमा का सार लिखिए।

13. अच्छाई प्राप्त करने से क्या होता है?

14 बुराई का उपकार क्या है?

15. दुष्ट को लज्जित करने के लिए क्या करना चाहिए?

16 कृतज्ञता किसे कहते है?

Unit 1.indd 3 23-06-2018 10:56:23

2 पद्य शुभकामना



- श्री मैथिलि शरण गुप्त

कवि परिचय

राष्ट्र कवि श्री मैथिलि शरण गुप्तजी का जन्म झाँसी जिले के चिरगाँव में हुआ था। आप बापूजी के सच्चे अनुयायी थे। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में आप की कविताओं ने लोगों में देश प्रेम जगाने का महान कार्य किया। भारत सरकार ने आपको संसद का सदस्य मनोनीत किया तथा पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। भारत भारती, पंचवटी, साकेत, यशोधरा आदि आपकी प्रसिद्ध रचनायें हैं। 'साकेत' पर आपको 'मंगला प्रसाद' पुरस्कार भी मिला है।

कवि भारतवासियों के कल्याण की कामना करते हुए भगवान से प्रार्थना करता है कि हे गणेश! लोगों की उन्नति में अवलंब देकर अपने विघ्नहर को नाम सार्थक बनाइये। सभी सद्‌गुण प्रदान कर उन्हें कर्तव्यनिष्ठ बनाइये। राष्ट्रीयता की भावना जगाइये और भाईचारे को बढ़ाइये। कठिनाइयों में भी अविचल रहने का आत्मबल दीजिये तथा सत्य पथ पर चलने की शक्ति प्रदान कीजिये।

Unit 2.indd 4 23-06-2018 10:58:27

सबकी नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह हो।
गुण, शील, साहस, बल तथा सबसे भरा उत्साह हो।।
सबके हृदय में सर्वदा समवेदना का दाह हो।
हमको तुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हो।।
विद्या, कला-कौशल में सबका अटल अनुराग हो।
उद्योग का उन्माद हो, आलस्य - अघ का त्याग हो।।
सुख और दुख में एक-सा सब भाईयों का भाग हो।
अन्तः करण में गूँजता राष्ट्रीयता का राग हो।।
कठिनाइयो के मध्य अध्यावसाय का उन्मेष हो।
जीवन सरल हो, तन सबल हो, मन विमल सविशेष हो।।
छुटे कदापि न सत्यपथ, निज देश हो कि विदेश हो।
अखिलेश का आदेश हो, जो बस वही उद्देश्य हो।।
उपलक्षय के पीछे कभी विगलित न जीवन-लक्षय हो।
जब तक रहे यह प्राण तन में पुण्य का ही पक्ष हो।।
कर्तव्य एक न एक पावन नित्य नेत्र समक्ष हो
सम्पति और विपत्ति में विचलित कदापि न वक्ष हो।।

कठिन शब्दार्थ

`रंब	-	विघ्नेश्वर	उपलक्ष	-	संकेत	उन्मेष	- विकास, प्रकाश
समक्ष	-	सामने	समवेदना	-	सहानुभूति	विगलित	- बिगड़ा हुआ।
अटल	-	अचल	कदापि	-	कभी	अघ	- पाप
वक्ष	-	हृदय	अध्यवसाय	-	परिश्रम		

Unit 2.indd 5 23-06-2018 10:58:27

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए।

1. श्री मैथिलीशरण गुप्त के बारे में लिखिये।

2. कवि की शुभकामना क्या है?

3. कवि सबके हृदय में किसकी दाह चाहता है?

4. किस पर उन्माद होना चाहते हैं?

5. कवि किस से दूर रहना चाहते हैं?

6. कवि की दृष्टि में तन, मन, धन कैसे हो?

7. कवि जीवन में किन बातों से विचलित नहीं होना चाहता है?

8. "शुभकामना" कविता का सारांश लिखिए।

Unit 2.indd 6 23-06-2018 10:58:27

3 पद्य चाह

- श्री माखनलाल चतुर्वेदी

चाह कविता के कवि श्री माखनलाल चतुर्वेदी हैं। कवि का जन्म सन् 1988 में हुआ। वे स्वतंत्रता सेनानी थे। वे गाँधी के अनुयायी थे। अपनी जोशिली वाणी द्वारा आपने स्वतंत्रता की लहरों को आगे बढ़ाया। कवि अपने आपको एक भारतीय आत्मा मानते थे।



चाह नहीं, मैं सुरबाला के
गहनों में गूँथा जाऊँ;
चाह नहीं, प्रेमी माला में
बिंध प्यारी को ललचाऊँ।
चाह नहीं, सम्राटों के शव
पर हरि! मैं डाला जाऊँ;
चाह नहीं, देवों के सिर पर
चढ़ूँ, भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ में देना तुम फेंक;
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जावें वीर अनेक।।

Unit 3.indd 7 23-06-2018 10:59:02

कठिन - शब्दार्थ

सुरबाला - देवकन्या गहना - आभूषण गूँथा - पिरोया

बिंध - छेदा जाना इठलाना - गर्व करना वनमाली - वनों का माली श्रीकृष्ण

शीश चढ़ाना - प्राण त्यागना पथ - रास्ता

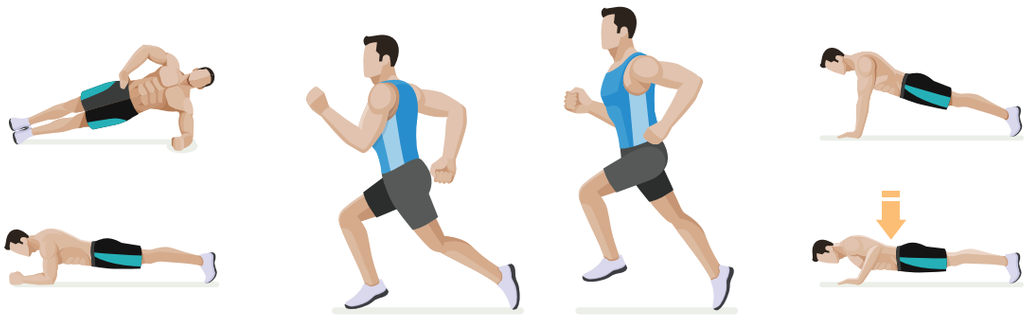
प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. चाह कविता के कवि कौन हैं?
2. कवि अपने आपकों क्या मानते थे?
3. फूल की चाह क्या है?
4. फूल की चाह के माध्यम से कवि का क्या कहना है?
5. "चाह" कविता का सारांश लिखिये।

Unit 3.indd 8 23-06-2018 10:59:02

4 गद्य स्वच्छता और व्यायाम

स्वच्छता और व्यायाम



शरीर - रक्षा धर्म का पहला साधन है, शरीर आत्मा का मंदिर है, शरीर को स्वच्छ पवित्र और दृढ़ रखना चाहिए।

शरीर-रक्षा के लिए स्वच्छता और स्वास्थ्य अत्यंत आवश्यक है, ठंडे पानी से नहाने से सारे दिन स्फूर्ति बनी रहती है, भोजनादि के बाद स्नान करना उचित नहीं है।

स्नान से पूर्व हमें अपने पेट, दाँतों , जिह्वा आदि को स्वच्छ बना लेना आवश्यक है। दातुन के लिए विशेषकर नीम ही लाभकारी होता है।

जिस प्रकार आत्मा के लिए शरीर की शुद्धता आवश्यक है, उसी प्रकार शरीर के लिए मकान की भी सफ़ाई आवश्यक है, मकान हवादार होना चाहिए। बन्द मकानों में सूर्य का प्रकाश न होने के कारण सील बनी रहती है और उसमें रोगों के कीटाणु भी खूब पनपते हैं। फर्श पर गोबर, मिट्टी से लीपने तथा झाड़-पोंछ से कीटाणुओं का शमन होता है।



मकान को सुव्यवस्थित रखने से हमारे कार्यों में कुशलता और सुलभता प्राप्त होती है। स्वस्थ वातावरण का मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन रहता है। शरीर रक्षा के लिए नियमित संतुलित आहार-विहार समय पर सोना और जागना तथा व्यायाम की भी अत्यंत आवश्यकता है।

Unit 4.indd 9 23-06-2018 10:59:32

व्यायाम नियमित होना चाहिए, व्यायाम शरीर को पुष्ठ और बलिष्ठ रखने का साधन है।

हमको जीने के लिए खाना चाहिए न कि खाने के लिए जीना चाहिए, स्वाद के लिए भोजन को अधिक चटपटा बना लेना हानिकारक है। भोजन में शाक पात और फलों का अधिक सेवन करना लाभदायक है। मांसाहार स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक है। मांसाहार से क्रोध तथा आलस्य की मात्रा बढ़ती है।

अपने हाथ से कुछ काम करना जैसे पानी भरना, बोझा उठाना, मकान की सफ़ाई करना, कपड़े धोना भी व्यायाम का एक उपयोगी अंश है। हममें हाथ से काम करने का गौरव आना चाहिए। काम मनुष्य को ऊँचा उठाता है, उसको गौरव प्रदान करता है। काम करना ही ईश्वर है। जो काम करते हैं उनमें आत्मनिर्भरता आती है। उनका जीवन संतुलित और सौंदर्यमय बन जाता है। स्वच्छता और व्यायाम जीवन-शैली को बदलता है। जीवन को सुखमय तथा स्वस्थ बनाये रखने में काम आता है। माता-पिता तथा शिक्षकों को चाहिए कि बालक - बालिकाओं को इसकी आवश्यकताओं पर जोर दे।

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. धर्म रक्षा का पहला साधन क्या है?
2. शरीर को कैसा रखना चाहिए?
3. आत्मा के लिए किसकी आवश्यकता है?
4. मकान कैसा होना चाहिए?
5. कीटाणु-नाश का उपाय बताइये?
6. व्यायाम कैसे होना चाहिए?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. शरीर रक्षा के लिए हमें क्या करना चाहिए?
2. सात्विक भोजन का महत्व क्या है?
4. स्वास्थ्य की रक्षा के लिए किन-किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?
5. व्यायाम करने से क्या-क्या लाभ है?
6. स्वच्छता और व्यायाम पाठ से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

Unit 4.indd 10 23-06-2018 10:59:32

III. "स्वच्छता और व्यायाम" पाठ का सारांश लिखिये।

IV. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

व्यायाम नियमित होना चाहिए। व्यायाम शरीर को पुष्ठ और बलिष्ठ रखने का साधन है। हमको जीने के लिए खाना चाहिए न कि खाने के लिए जीने चाहिए। स्वाद के लिए भोजन को अधिक चटपटा बना लेना हानिकारक है। भोजन में शाक पात और फलों का अधिक सेवन करना लाभदायक है। मांसाहार स्वास्थ्य की दष्टि से हानिकारक है। मांसाहार से क्रोध तथा आलस्य की मात्रा बढ़ती है।

1. व्यायाम कैसे होना चाहिए?
2. व्यायाम क्या है?
3. जीने की कला क्या है?
4. भोजन में क्या-क्या सेवन करना चाहिए?
5. मांसाहार से क्या होता है?

लोक-कहावत

विभिन्न रोगों का निवारण

1. आँख : काली मिर्च को पीसकर घी-बूरे संग खाए।
   नेत्र रोग सब दूर हो गिद्ध दृष्टि हो जाए।।
2. दाँतों : त्रिफला, त्रिकुटा, तुतिया पाँचों नमक पतंग।
   दाँत वज्रसम होते हैं मान फूल के संग।।
3. कान : सौ बरस सुनना चाहो।
   कड़वा तेल कान में डालो।।
4. नाक : कड़वा तेल नित नाक लगावें।
   ताकों नाक रोग मिट जावे।
5. अनिद्रा रोग : गुड के संग मिलाय के पीपर मूल जो खाय।
   कहें भागुरी भाच जी गहरी निद्रा आय।

Unit 4.indd 11 23-06-2018 10:59:32

6. काले बाल : त्रिफला जल से जो सिर धोवे।
बाल सफ़ेद न वाके होवे।।

7. घाव : किसी शस्त्र से अंग कट जावें।
चूना भरे पकन नहीं पावे।।

8. तेजाब : यदि कोई तेजाब को धोखे से पी जाए।
जल में चूना पीजिए सभी असर मिट जाए।

किन्हीं दो लोक-कहावत का भाव समझाइए?

Unit 4.indd 12 23-06-2018 10:59:32

5 गद्य - भारतरत्न कामराज

भारतरत्न कामराज



निस्वार्थ, कर्मवीर, शिक्षा-ज्ञान प्रदान में अग्रणीय, गरीबों के हितैषी, स्पष्टवादी व सुधारवादी, प्रशंसनीय कार्यों के लिए, ख्याति प्राप्त नेता कामराज।

कुमारसामी कामराज का जन्म 15 जुलाई 1903 को तमिलनाडु के विरुदुनगर में हुआ। उनके माता, पिता श्रीमति व श्री कामाक्षी कुमारसामि थे। आपकी बाल्यावस्था में ही पिताजी की मृत्यु हो गई। दादा की देखरेख में रहने लगे। घर की आर्थिक स्थिति नहीं के बराबर थी। इससे सिर्फ़ प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर नौकरी में लगे। शिक्षा से ज्यादा अनुभव उन्हें समाज से मिला।

सोलहवें साल में आप राजनीति में प्रवेश हुए, वन्देमातरम् आपका प्यारा धुन था। आपने सर्वप्रथम वैक्कम सत्याग्रह में भाग लिया। आप सत्यमूर्ति से प्रेरणा प्राप्त कर देश की आज़ादी के लिए आवाज़ उठाने लगे। पूज्य बापू से संपर्क प्राप्त कर नमक सत्याग्रह में अपने-आपको जुड़ाया। धीरे-धीरे आपकी सोच राष्ट्रोद्धार में बदली और आप एक निष्ठावान व कर्मठ संघटक बने। आपकी कार्यकुशलता व अनुभव ने आपको कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया। आप योजनाबद्ध कार्य करने में निपुण थे। आपकी योजना से कांग्रेस पुनरुद्धार हुआ, आपकी विशेषता अन्यों को ऊपर उठाने में रही।

आप समय-संजीवी थे। आपकी सोच के कारण ही श्री लाल बहादुर शास्त्री, श्रीमती इंदिरा गाँधी आदि प्रधान मंत्री बने। आप उच्च पद पर बैठना नहीं चाहते थे, बल्कि दूसरों को बिठाकर उससे आनन्दित होते थे।

तमिलनाडु के मुख्यमंत्री बन शिक्षा की आवश्यकता और अनिवार्यता पर आपने जोर दिया। अपने कार्यकाल में निशुलक शिक्षा के साथ मध्याह्न भोजन की भी व्यवस्था की।

सत्कार्य के लिए निर्णय लेने में देरी नहीं करते थे। आपके रचनात्मक कार्यक्रमों में ग्रामों में बिजली की व्यवस्था, कुटीर उद्योग तथा कारखानों की स्थापना, बेरोजगारी समस्या का

Unit 5.indd 13 23-06-2018 10:59:52

समाधान ढूँढ निकालना आदि था।

आपकी सेवाओं के उपलक्ष्य में आपको मरणोपरान्त सन् 1976 में सर्वोच्छ सम्मान "भारत रत्न" की उपाधी प्रदान की गई।

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. आप कांग्रेस के किन-किन पदों पर रहे?
2. बापू से प्रेरणा प्राप्त कर किस आन्दोलन में भाग लिया?
3. तमिलनाडु के मुख्य मंत्री बन किन बातों पर आवश्यक ध्यान दिए?
4. आपको सर्वोच्छ सम्मान कब प्राप्त हुआ

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. कामराज का प्रारंभिक जीवन कैसा था?
2. कामराज के बारे में पाँच वाक्य लिखिए।
3. कामराज ने किन-किन पदो को संभाला और अपने कार्यकाल में क्या-क्या निर्णय किया?

III. "भारतरत्न कामराज' पाठ का सारांश लिखिये।

IV. निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

कुमारसामी कामराज का जन्म 15 जुलाई 1903 को तमिलनाडु के विरुदुनगर में हुआ। उनके माता-पिता श्रीमति व श्री कामाक्षी कुमारसामि थे। आपकी बाल्यावस्था में ही पिताजी की मृत्यु हो गई। दादा की देखरेख में रहने लगे। घर की आर्थिक स्थिति नहीं के बराबर थी। इससे सिर्फ़ प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त कर नौकरी में लगे। शिक्षा से ज्यादा अनुभव उन्हें समाज से मिला।

1. कामराज का जन्म कब और कहाँ हुआ?
2. कामराज के माँ और बाप कौन थे?
3. कामराज की प्रारंभिक शिक्षा कहाँ हुई?
4. शिक्षा से ज्यादा कामराज को समाज से क्या मिला?

मुहावरे

1. अंग-अंग कुरकुराना - बहुत प्रसन्न होना

   मुहम्मद को नौकरी मिलते तो उसका अंग-अंग कुरकाराने लगा।

Unit 5.indd 14 23-06-2018 10:59:52

2. अंधे की लाठी- एक मात्र सहारा

लीला का पति मर गया अब तो उसका बेटा ही अंधे की लाठी है।

3. अकल का दुश्मन - मूर्ख

रामगुलाम से तुम किसी समझदारी की प्रतीक्षा न करो, वह असल में अकल का दुश्मन है।

4. अगर मगर करना - टाल-मटोल करना

मैं ने अपने मित्र जोसफ़ से दो हज़ार रुपए माँगे लेकिन उसने अगर-मगर करके एक महीना टाल दिया।

5. अपना उल्लू सीधा करना - स्वार्थ सिद्ध करना

ज्यादातर लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए अधिकारियों की खुशामदें करते हैं।

6. अपनी खिचड़ी अलग पकाना - सब से अलग रहना

अपनी खिचड़ी अलग पकाथे बगैर समाज सेवा में लगना था।

7. अपने पैरों पर खड़ा होना - आत्मनिर्भर होना

भारत में अपने पैरों पर खड़ा होने की ताकत है।

8. आँखों का तारा -बहुत प्यारा

माँ के लिए अपने बच्चें ही आँखों के तारे होते है।

9. आँखों पर परदा पड़ना - भला-बुरा न समझना

माया मोह में पड़े व्यक्ति की आँखों पर परदा पड़ गया।

10. आसमान के तारे तोड़ना - असंभव काम करना

आसमान के तारे तोड़ने में आपके युक्त प्रयत्नशील है।

11. उन्नीस बीस का अंतर - बहुत कम अंतर

उन्नीस-बीस के अंतर में छात्रों की संख्या हैं।

12. उल्टी गंगा बहाना - विपरीत कार्य कराना

आजकल उल्टी गंगा बहाना नहीं चाहते है।

Unit 5.indd 15 23-06-2018 10:59:52

6 कहानी हार की जीत

– श्रीसुदर्शन

लेखक-परिचय

जन्म 1895 में मृत्युः 1967

हिंदी में उनकी पहली कहानी हार की जीत 1920 में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई थी।



हार की जीत के अतिरिक्त सुदर्शन की कमल की बेटी, कवि की स्त्री, तीर्थ-यात्रा, संसार की सबसे बड़ी कहानी आदि बहु चर्चित और सुप्रसिद्ध कहानियाँ हैं।

सामाजिक समस्याओं का समाधन, बुराई पर अच्छाई की या पाप पर पुण्य की विजय और परंपरागत मूल्यों की स्थापना आदि सुदर्शन की ऐसी विशेषताएँ हैं। मध्यवर्गीय और ग्राम्य जीवन जुड़े चरित्रों का चरित्रांकन करने में सुदर्शन विशेष रूप से सिद्धहस्त हैं।

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुन्दर था, बड़ा बलवान्। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुलतान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। "मैं, सुलतान बिना नहीं रह सकूँगा", उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गयी थी। वे उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते – ऐसा चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो। जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते उन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर कांपते थे। होते-होते सुलतान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर

Unit 6.indd 16 23-06-2018 11:00:29

हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा, "खड्गसिंह, क्या हाल है?"

खड्गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है।"

"कहो, इधर कैसे आ गये?"

"सुलतान की चाह खींच लायी।"

"विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।"

"कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुंदर है।"

"क्या कहना। जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।"

बाबा भारती और खड्गसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परंतु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुज़रा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ। कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् उसके हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या!"

बाबाजी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गये। घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उसपर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।"

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली

Unit 6.indd 17 23-06-2018 11:00:29

में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गये और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गये और इस भय को स्वप्न के भय की नाई मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज़ आयी, "ओ बाबा, इस कंगाले की सुनते जाना।"

आवाज़ में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, "क्यों, तुम्हें क्या कष्ट है?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझपर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।"

"वहाँ तुम्हारा कौन है?"

"दुर्गादत्त वैद्य का नाम सुना होगा। उनका सौतेला भाई हूँ।"

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गयी। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाये लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी। वह अपाहिज डाकू खड्गसिंह था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, "ज़रा ठहर जाओ।"

खड्गसिंह ने आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, "बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।"

"परन्तु एक बात सुनते जाओ।"

Unit 6.indd 18 23-06-2018 11:00:29

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है, और कहा "यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड्गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। उसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।"

"बाबाजी, आज्ञा कीजिये। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।"

"अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।"

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा "कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।" इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, "बाबाजी, इससे आपको क्या डर है?"

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, "लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।" यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गये, परंतु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाई खिल जाता था। कहते थे, "इसके बिना मैं रह न सकूँगा।" इसकी रखवाली में कई रात सोये नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक न दिखाई पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मंदिर में पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भूँक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की भाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

Unit 6.indd 19 23-06-2018 11:00:29

रात्री का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गये।

घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया।

अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन के बिछुड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते।

फिर वे संतोष से बोले, "अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।"

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. सुदर्शन की पहली कहानी क्या थी किसमें प्रकाशित हुई?

2. सुदर्शन की प्रमुख रचनाओं का नाम लिखिये।

3. बाबा भारती को किसे देखकर आनंद होता था?

4. हार की जीत कैसे हुई?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. खड़गसिंह कौन था? उसने क्या किया?

2. खड़गसिंह के मन परिवर्तन का कारण क्या था?

Unit 6.indd 20 23-06-2018 11:00:29

7 निबंध

1. प्रदूषण

प्रदूषण का अर्थ है - दूषित होना पर्यावरण - प्रदूषण का अर्थ है, शुद्ध जलवायु में दूषित तत्वों का मिल जाना, प्रदूषण मुख्यतः तीन प्रकार का होता है - 1. वायु प्रदूषण (2)जल प्रदूषण तथा (3) ध्वनि प्रदूषण।

प्रदूषण का जन्म वैज्ञानिक प्रगति के कारण हुआ है। मनुष्य ने जब से प्रकृति के साथ मनचाही छेड़वाड़ की है, तभी से प्रकृति मनुष्यपर कहर की तरह बरस पड़ी है, मनुष्य ने अपने भवन बनाने के लिए वन काटे, पहाड़ तोड़े, समतल मैदान बनाए, हरियाली बनाए ईंट-बजरी और तारकोल का निर्माण किए, दिन रात कारखाने चलाने के लिए विद्युत गृह और विलास की वस्तुओं के लिए प्रदूषण फैलानेवाले कारखानों का निर्माण किया।

वायु में कार्बन डाईआक्साइड़, कारखानों का धुआँ, विषैली गैसे, खतरनाक जीवनाशक तत्व असन्तुलित रूप से घुल गए हैं, वायु प्रदूषण के कारण आँखों में जलन, त्वचा में एलर्जी साँस में कष्ट, प्लेग, डेंगू आदि कितनी ही प्राणाघातक बीमारियों जन्म ले रही हैं। भीड़भाड़ भरे इलाकों में तो मनुष्य बिना नाक पर कपड़ा लगाए उस जगह को पार भी नही कर सकता।

प्रदूषित जल से सारी भूमि दूषित हो रही हैं, परिणामस्वरूप हमें प्रदूषित फसलें मिलती है और गन्दा जल मिलता है।

वायुमंडल में ध्वनि-तरंगों का संतुलन भी आवश्यक है, स्वस्थ मनुष्य की श्रपण क्षमता लगभग 80-85 डेसीबल होती है, इससे अधिक ध्वनि मनुष्य को बहरा, तनावग्रस्ता, अशांत और उत्तेजित कर देती हैं। आजकल वाहनों, फैक्ट्रियों मशिनों के सामूहिक शोर से रक्तचाप, मानसिक तनाव, बहरापन आदि बीमारियाँ बढ़ रही हैं।

प्रदूषण से मुक्ति का सर्वोत्तम उपाय है - इस समस्या के प्रति सचेत होना। अन्य उपाय है - आसपास पेड़ लगाना, हरियाली को अधिकाधिक स्थान देना, अनावश्यक शोर को कम करना। लकड़ी के बदले नए विकल्प खोजना, फैक्ट्रियों के दूषितजल और धुएँ के निष्कासन का उचित उपाय खोजना, घातक बीमारियों पैदा करनेवाले उद्योगों को शहर से दूर स्थापित बोध, परमाणु विस्फोटो पर रोक लगाना, इन उपायों को लागू करना तथा समाज को बाध्य करना ही प्रदूषण से बचने का सर्वोत्तम उपाय है।

Unit 7.indd 21 23-06-2018 11:21:45

2. पुस्तकालय

पुस्तकों का आलय पुस्तकालय हैं। ज्ञान वर्धन का केंद्र पुस्तकालय है। ज्ञान सागर पुस्तकालय है। पुस्तकालय शिक्षा के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाति है। पुस्तकालय सार्वजनिक व निजि दो प्रकार कि हैं। जन - साधारण सार्वजनिक पुस्तकों की उपयेग करते हैं। जन-विशेष निजि पुस्तकालय का उपयोग करते है। पुस्तकालय में गद्य, पद्य, निबंध तथा विभिन्न भाषाओं का समाचार-पत्र, मासिक पत्रिका आदि का संग्रह हैं। शिक्षक के लिए सहायक ग्रंथ भी अलंकृत हैं। छात्र-छात्रायें समय का सदुपयोग पुस्तकालय की पुस्तकों के अध्ययन द्वारा करते हैं।

पुस्तकालय का अंग वाचनालय हैं। पुस्तकालय में शांति से बैठकर पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए। पुस्तकालय से ली गई पुस्तकों को समय पर लौटाना चाहिए।

वर्तमानकाल में लोग पुस्तकालय का उपयोग बहुत कम करते हैं। कम्प्यूटर के जरिए घर बैठे-बैठे दुनिया भर की पुस्तकों का डाऊनलोड कर ज्ञान हासिल कर लेते हैं। सारे पाठों को 'गूगूल' द्वारा ढूँढ निकालते हैं। विज्ञान ने दुनिया की हर मांग को सर्व-साधारण बना दिया है।

पुस्तकालय शिक्षक एवं लेखकों के लिए एक वर प्रसाद हैं। उन्हें सहायक ग्रंथों का चयन कर उसका सदुपयोग करने में सुविधाजनक होती हैं।

शिक्षा स्कूलों और कालेजों तक तक सीमित नहीं। स्कूल की पढ़ाई अतिरिक्त अन्य विषयों की पुस्तकों का अध्ययन करना चाहिए।

पाठ्य पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञान सीमित होता है। ज्ञानार्माजन के लिए व्याकरण संदर्भ पुस्तक को परमावश्यक है।

रचनाकारों के लिए पुस्तकालय ईश्वरीय देन है। पुस्तकालय बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सबके लिए आवश्यक है। पुस्तकालय का सदस्य लाभाविन्त होना हर मानव का कर्तव्य है।

Unit 7.indd 22 23-06-2018 11:21:45

3. समय का सदुपयोग

आज का काम आजी ही करना चाहिए। समय का सदुपयोग जीवन के उन्नति का लक्षण हैं। समय बहुमूल्य है। समय संजीवनी-भूटी है।

बीता समय वापस नहीं आता है। समय का दुरूपयोग जीवन का अवन्नती है। समय को निर्माण कार्य में बिताना चाहिए। जीवन-शैली समयानुसार बदलती है। बदलते चरण के अनुसार हमें भी बदलना चाहिए। समय बदलाव लाता है। बदलाव का सही उपयोग कर लेना चाहिए। सभी का समय एक सा नहीं होता है। मौका मिलता है तो उसका सदुपयोग करना चाहिए।

विद्यार्थी-जीवन समय का आधार है। सभी के जीवन में उतार-चढ़ाव आती है। विद्यार्थी समय का मूल्य जानकर पुस्तकालय का उपयोग करना चाहिए। छात्रों को समय पर खाना, पीना, सोना जीवन में जैसा आवश्यक हैं। वैसा समय का अनुपालन सद्कार्यों में बिताना जीवन का मूल्य बना लेना चाहिए। अध्यापक रचनात्मक कार्यों में समय बिताते हैं। अच्छे काव्यों को रचने में विद्वान समय बिताते हैं। मूर्ख लोग सोकर, कलह आदि कर अपना समय बिताते हैं।

समय को कोई भी चुनौति नहीं दे सकता। समय न किसी के लिए रुकता है। समय न कभी थकता है। समय निरंतर बढ़ता है। समय चक्र दुःख-सुख का सूचक है। जैसे दिन-रात, सूर्य-चंद्र आदि बदल-बदलकर आते है। उसी प्रकार समय परिवर्तनशील है।

दुःख में स्वपनों को साकार करने का ठोस योजना बनाना तथा सुख में उसका कार्यावयन करना जीवन का उद्देश्य बना लेना

आशा ही सुख का कारण है। आशा ही विकास का कारण है।

इसलिए समय का सदुपयोग करने सीखना चाहिए।

Unit 7.indd 23 23-06-2018 11:21:45

8 व्याकरण

1. संज्ञा

परिभाषा और प्रकार : किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान , जाति, भाव आदि का बोध करानेवाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं। जैसे : राम, पुस्तक, दिल्ली, सुंदरता।

व्यक्तिवाचक संज्ञा: जिस शब्द से किसी एक खास व्यक्ति, स्थान या वस्तु का बोध हो, व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसेः कृष्ण, प्रयाग, हिमालय आदि। ये शब्द केवल एक का ही बोध कराते पूरी जाति का नहीं।

प्रायः व्यक्तिवाचक संज्ञा में व्यक्तियाँ (राम, मोहन) देशों (भारत, नेमाल) नगरों (दिल्ली, मद्रास) नदियों (गंगा, यमुना) पवर्तों (कैलाश, हिमालय) पुस्तकों (कामायनी, गोदान) तथा त्योहारों (होली, दीवाली) के नामों की गणना की जाती हे। समाचार पत्रों, दिनों, दिशाओं, महीनों आदि के नाम भी व्यक्तिवाचाक संज्ञा के अंतर्गत ही आते हैं।

जातिवाचक संज्ञाः- जिस शब्द से एक जाति के सभी पदार्थों और प्राणियों का बोध हो, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जेसे :- गाय, आदिमी, पुस्तक। ये शब्द अपनी पूरी जाति का बोध

कराते हैं। प्रायः जातिवाचक संज्ञा में वस्तुओं (कलम, घड़ी) पशु-पक्षियों (हाथी, कौआ) फल-फूलों (आम, केला) धातुओं (सोना, चाँदी) तथा व्यवसाय संबंधी व्यक्तियों (लुहार, मंत्री, अध्यापक) के नामों की गणना की जाती है। नगर, शहर, गाँव आदि स्थानवाची शब्द भी जातिवाचक संज्ञा के अंतर्गत ही आते हैं।

भाववाचक संज्ञाः- जिन शब्दों सं किसी पदार्थ में पाये जानेवाले धर्म, गुण, भाव, दशा, कार्य (व्यापार या चेष्टा) आदि के नाम का ज्ञान होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं - जैसे - मान्-ावता, मिठास। प्रायः गुण, दोष (प्रेम, मित्रता, शत्रुता) अवस्था (जवानी, बुढ़ापा) व्यापार (पढ़ाई, लिखाई) तथा अमूर्त भाव, (करुणा, दुख) भाववाचक संज्ञा में आते हैं। इनके अतिरिक्त क्रिया के मूल रूप (खाना, पीना) भी भाववाचक संज्ञा ही कहलाते हैं।

अंग्रेज़ी व्याकरण के समानांतर कुछ विदवान संज्ञा के दो और भेद मानते हैं। समुदायवाचक और द्रव्यवाचक संज्ञा। समूह, समुदाय या झुंड का बोध करानेवाले शब्द को समुदायवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसेः- कक्षा, भीड़, सभा, गोष्ठी आदि।

द्रव्यवाचक संज्ञाः- द्रव्य, पदार्थ अथवा धातु का बोध करानेवाले शब्द द्रव्यवाचक संज्ञा कहलाते हैं। जैसेः- सोना, चाँदी, हीरा, कोयला, तेल, चावल, पानी, मिट्टी आदि। इनको जातिवाचक संज्ञा के ही अंतर्गत मानना उचित है।

Unit 8.indd 24 23-06-2018 11:22:11

भाववाचक संज्ञा बनाना

भाववाचक संज्ञाएँ प्रकार के शब्दों से बनती हैं-

1. जतिवाचक संज्ञाओं से
2. सर्वनामों से
3. विशेणोंषों से
4. क्रियाओं से

1. जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा	2. सर्वनाम से	भाववाचक संज्ञा
देव	देवत्व	अहं	अहंकार
लड़का	लड़कपन	निज	निजत्व
बच्चा	बचपन	स्व	स्वत्व
युवा	यौवन	मम	ममता
शिशु	शैशव	अपना	अपनापन
पशु	पशुता	गिरना	गिरावट

3. विशेषण से	भाववाचक संज्ञा	4. क्रिया से	भाववाचक संज्ञा
मीठा	मिठास	दौड़ना	दौड़
उदार	उदारता	हँसना	हँसी
सुंदर	सुंदरता	पढ़ना	पढ़ाई
अच्छा	अच्छाई	खेलना	खेल
लाल	लालिमा		

निम्नलिखित प्रश्नों को उत्तर दीजिए:-

1. संज्ञा किसे कहते हैं?

   नाम बतानेवाले शब्द को संज्ञा कहते है।

2. संज्ञा कितने प्रकार के हैं, संज्ञा के भेद कितने हैं? ध्संज्ञा तीन प्रकार की है।

   1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक एवं 3. भाववाचक। संज्ञा के पाँच भेद माने गए हैं।

   1. जातिवाचक 2. व्यक्तिवाचक 3. भाववाचक 4. समुदायवाचक 5. द्रव्यवाचक संज्ञा

3. वस्तुतः संज्ञा कितने प्रकार के है?

   वस्तुतः संज्ञा तीन प्रकार के है। (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक

Unit 8.indd 25 23-06-2018 11:22:11

4. संज्ञा का उदाहरण लिखिए:-

राम, काशी, गंगा, मनुष्य, घर, पहाड़, लंबाई, चतुराई, मिठास, सभा, भीड़

5. पदार्थवाचक संज्ञा किसे कहते हैं और इसके कितने भेद है?

किसी पदार्थ व पदार्थों के समूह का बोध करानेवाले शब्द को पदार्थवाचक संज्ञा कहते हैं। पदार्थवाचक संज्ञा के दो भेद है। 1. व्यक्तिवाचक 2. जातिवाचक

6. पदार्थवाचक संज्ञा कितने प्रकार के हैं?

पदार्थवाचक संज्ञा दो प्रकार के हैं।

7. भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं?

भाव या गुणों के बारे में बतानेवाले शब्द को भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

8. भाववाचक संज्ञा के नियम क्या हैं?

धर्म, गुण के अर्थ में, अवस्था, व्यापार। उदाहरण:- ठंडाई, धीरज, नींद, पीड़ा, सफाई, बहाव, दान, दौड़।

9. जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा बनाइए?

बूढ़ा - बुढ़ापा लड़का - लड़कपन

मित्र - मित्रता दास - दासत्व

10. विशेषण से भाववाचक संज्ञा बनाइए।

गर्म - गर्मी चतुर - चतुराई

मीठा - मिठास बड़ा - बड़पन

11. क्रिया से भाववाचक संज्ञा बनाइए

चलना -चलन घबराना - घबराहट

सजाना - सजावट बहना - बहाव

Unit 8.indd 26 23-06-2018 11:22:11

12. भाववाचक संज्ञा का रूप लिखिए।

जवान - जवानी भला - भलाई बच्चा - बचपन

ठंडा - ठंड चढ़ना - चढ़ाई जरूरी - जरूरत

13. भाववाचक संज्ञाएँ बनाने के लिए कौन-कौन से प्रत्यय लगाएँ जा सकते हैं?

भाववाचक संज्ञाएँ बनाने के लिए शब्दों की प्रकृति के अध्धर पर आई, आहट, आवट, अन, आपा, आव, ता, त्व प्रत्यय लगाएँ जा सकते हैं।

14. भाववाचक संज्ञा चुनकर लिखिए।

ताजमहल की बनावट देखकर लोग दाँतों तले उँगली दबाते हैं। बनावट

तनाव से आदमी स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। तनाव

15. वाक्यों के प्रयुक्त व्यक्तिवाचक एवं जातिवाचक संज्ञा को चुनकर क्रमानुसार लिखिए।

1. दिल्ली भारत की राजधानी है। दिल्ली (व्यक्तिवाचक) राजधानी (जातिवाचक)

2. पहाड़ों में सबसे बड़ा हिमालय है । हिमालय पहाड़ों

2. सर्वनाम

जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें सर्वनाम कहते हैं - जैसे :- मैं, हम, तू, तुम, आप, यह, ये, वह, ये, क्या, हमारा, तुम्हारा आदि। सर्वनाम के छः भेद होते हैं - 1. पुरुषवाचक सर्वनाम, 2. निजवाचक सर्वनाम, 3. निश्चयवाचक सर्वनाम, 4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम, 5. संबंधवाचक सर्वनाम 6. प्रश्नवाचक सर्वनाम।

1.पुरुषवाचक सर्वनामः- किसी पुरुष या व्यक्ति का सूचक सर्वनाम, पुरुषवाचक कहलाता है।

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं:-

(1) **उत्तम पुरुषवाचक :-** जो सर्वनाम कहनेवाले का बोध करते हैं, वे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसेः- हम, मैं, मेरा, हमारा आदि। राम बोला - मैंने खाना खा लिया है। सुरेश और रमेश ने कहा हमें बाहर जाना है।

Unit 8.indd 27 23-06-2018 11:22:11

(2) **मध्यम पुरुषवाचक :-** जो सर्वनाम श्रोता के बोधक होते हैं, वे मध्यमपुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसेः- तू, तुम, तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, आप, आपका, आपके, आपकी आदि।

मनोहर ने वरुण से कहा - तुमने बहुत अच्छा किया, जो यहाँ चले आये।

करुण ने अनीता से पूछा - तुम्हारी बहन क्यों नहीं आती?

(3) **अन्य पुरुषवाचक :-** जो सर्वनाम बोलनेवाले अथवा सुननेवाले के सिवाय उन व्यक्तियों के बोधक हों, जिनके संबंध में बात हो रही है, वे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसेः- यह, ये, वह, वे, उनको, उनके, उन्हें

राम ने राजू को बताया कि रवि उसे मिला था। अब 'वह' चला गया है। शीला ने पूछा 'वे' सब कहाँ है?

(2) **निजवाचक सर्वनामः-** जहाँ वक्ता अपने लिए 'आप' या 'अपने आप' का प्रयोग करता है, वह निजवाचक सर्वनाम माना जाता है। जैसे- 1. यह कार्य मैं अपने आप कर लूँगा। 2. अपनी हालत के बारे में वह आप ही नहीं सोचता।

3. **निश्चयवाचक सर्वनाम :-** जो सर्वनाम निश्चयपूर्वक किसी वस्तु या व्यक्ति का बोध कराएँ, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे :- यह, ये, वह, वे आदि

1. तनुज का छोटा भाई आया है। यह बहुत समझदार है।

2. किशोर बाज़ार गया था। वह लौट आया है।

4. **अनिश्चयवाचक सर्वनामः-** जो सर्वनाम किसी वस्तु या व्यक्ति की ओर ऐसे संकेत करें कि उनकी स्थिति अतिश्चित या अस्पष्ट रहे, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे :- कोई, किसी, कुछ। मोहन!आज कोई तुमसे मिलने आया था। पानी में कुछ गिर गया है।

5. **संबंधवाचक सर्वनामः-** जो सर्वनाम वाक्य में प्रयुक्त किसी अन्य सर्वनाम से संबंधित हों, उन्हें संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। ये सर्वनाम वाक्य में सदैव एक-दूसरे के बाद आते हैं। जैसेः- जो.....सो, जिसकी.....उसकी, जैसा.....वैसा आदि।

1. जैसा करोगी, वैसा भरोगी, 2. जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

Unit 8.indd 28 23-06-2018 11:22:11

6. **प्रश्नवाचक सर्वनामः-** जो सर्वनाम प्रश्न करने के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक कहते हैं।

जैसेः- क्या, कौन 1. आप क्या लिख रहे हैं? 2. बाहर कौन खड़ा है?

दिप्पणियाँः-

1. मध्यपुरुषवाचक 'आप' आदरसूचक है तथा निजवाचक 'आप' निजत्व सूचक। दोनों का अंतर इस प्रकार है- 'आप' कल आइए। - पुरुषवाचक

'वे' अपने आप काम करने लगे। - निजवाचक

2. हम, ये, वे उन आदि बहुवचन रूपों का प्रयोग गर्व या सम्मान सूचक होता है। मगर कोई व्यक्ति कहे - जैसेः- हम आपके घर आएँगे। तो यह अपना बड़प्पन जताने के लिए है।

महात्मा गाँधी को राष्ट्रपिता कहा जाता है। उनका जन्म गुजरात में हुआ था। इसमें उनका प्रयोग सम्मान सूचक है।

सर्वनाम शब्दों के रूपांतरः- सर्वनाम विकारी शब्द है। लेकिन इससे लिंग के स्तर पर कोई विकार नहीं होता। वचन और कारक के कारण ही इसमें विकार होता है। पुल्लिंग में वह, तू आदि स्त्रीलिंग में भी यथावत् रहेंगे। किंतु एकवचन में 'मैं', बहुवचन में 'हम' हो जाता है। कर्म 'मुझे' संप्रदान 'मेरे लिए' हो जाता है। वचन और कारक के आधार पर सर्वनामों में रूप-रचना दी जा रही है। सर्वनाम का संबोधन कारक नहीं होता।

1. सर्वनामों में लिंगगत भेद नहीं होता, किंतु संबंध कारक की विभक्ति जुड़ते समय लिंग तथा वचन संबंधी परिवर्तन अवश्य होते हैं।

1. सर्वनाम	एकवचन	सर्वनाम	बहुवचन
मैं	मेरा, मेरे, मेरी	हम	हमारा, हमारे, हमारी
तू	तेरा, तेरे, तेरी	तुम	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
वह	उसका, उसके, उसकी	वे	उनका, उनके, उनकी
जो	जिसका, जिसके, जिसकी	जो	जिनका, जिनके, जिनकी

Unit 8.indd 29 23-06-2018 11:22:11

2. **वचन के आधार पर सर्वनामों में परिवर्तन होता है।**

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मैं	हम	तू	तुम	वह	वे
यह	ये	उस	उन	जिस	जिन
तेरा	तुम्हारा	आपका	आपके	किसे	किन्हें
जिसे	जिन्हें				

3. **सर्वनामों की कार्य रूप-रचना करते समय सर्वनाम शब्दों के मूल रूप में भी परिवर्तन आ जाता है।**

मैं - मुझे	तू - तुझ	यह - इस	वह - उस	जो - जिस
कौन - किस	ये - इन	वे - उन		

4. **आप ओर कोई को छोड़कर शेष सर्वनामों के कर्म और संप्रदान कारकों में 'को' के अतिरिक्त एक विभक्ति।**

(एकवचन में ए' और बहुवचन में 'एँ') और लगते हैं।

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मुझको, मुझे	हमको हमें	तुझको, तुझे	तुमको, तुम्हें
उसको, उसे	उनको, उन्हें	किसको, किसे	किनको, किन्हें

5. **निजवाचक 'आप' की कारक रचना केवल एकवचन में होती है। इसका विकृत रूप 'अपना' है, जो संबंध कारक की एक विभक्ति 'ना' लगाकर बना है। अतः इसमें संबंध की अलग से कोई विभक्ति नहीं लगती शेष विभक्तियाँ, आकारांत लड़का आदि शब्दों के समान लगती हैं। जैसेः-**

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अपना	अपनों की	अपने से	अपनों से
अपने में	अपनों में		

Unit 8.indd 30 23-06-2018 11:22:11

6. कुछ सर्वनाम शब्दों से शब्द पर बल देने के लिए 'ही' लगता है। जो एकवचन में 'ई' के और बहुवचन में ही के रूप में जुड़ता है। जैसेः-

एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मुझ + ही = मुझी	हम + ही = हमीं	तू + ही = तूही	तुम + हीं = तुम्हीं
उस + ही = उसी	उन + ही = उन्हीं	किस + ही = किसी	किन + हीं = किन्हीं
यह + ही = यही	उस + ही = उसी	इस + ही = इसी	इन + हीं = इन्हीं
वह + ही = वही	जिन + ही = जिन्हीं	जिस + ही = जिसी	

7. कुछसर्वनाम संयुक्त रुप में, तो कुछ पुनरावृत्ति रूप में भी प्रयुक्त होते हैं- जैसे :-

1. संयुक्त रूप में

जो - कुछ - जो कुछ आया है, वह आपने देख लिया।

जो - कोई - जो कोई आएगा, खाना खा जाएगा।

कोई - कुछ - कोई कुछ लाता है। कोई कुछ कहता है।

कौन - क्या - कौन क्या करता है, हमें क्या पता?

क्या - कुछ - वहाँ क्या-कुछ नहीं हुआ, सभी कुछ तो हुआ।

2. पुनरावृत्ति रूप मेंः-

जो-जो- तुम्हारे साथ जो-जो कुछ हुआ है, उसे विचार से कहो।

कोई - कोई - कोई-कोई तो लड़ने को तैयार बैठा रहता है।

कौन - कौन - वहाँ कौन-कौन बैठे हैं?

कुछ-कुछ - मुझे कुछ-कुछ याद तो आता है।

क्या-क्या - तुमने प्रदर्शनी में क्या-क्या देखा?

कोई न कोई - वहाँ कोई न कोई तो होगी ही।

कुछ न कुठ - उसने कुछ न कुछ तो कहा ही होगा।

Unit 8.indd 31 23-06-2018 11:22:11

निम्नलिखित प्रश्नों को उत्तर दीजिए।

1. सर्वनाम किसे कहते हैं?

संज्ञा के बदले आनेवाले शब्द को सर्वनाम कहते हैं।

2. सर्वनाम का उदाहरण दीजिए?

मैं, हम, यह, ये, जो, वह, वे, कौन, कोई, कुछ

3. पुरुषवाचक सर्वनाम कितने प्रकार के हैं क्या-क्या है?

पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के है।

1. उत्तम पुरुष 2. मध्यम पुरुष 3. अन्य पुरुष

3. विशेषण

परिभाषा :-संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता (आकार, गुण, संख्या आदि) प्रकट करनेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। जैसे :- अच्छा (लड़का), बुरी (बात), गंदा (मकान)

विशेष्य :- जिन शब्दों (संज्ञा या सर्वनाम) की विशेषता प्रकट की जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं। ध्यान देने की बात यह है कि विशेषण का प्रयोग विशेष्य से पूर्व भी होता है और पश्चात भी।

जैसे :- अच्छा लड़का, लड़का अच्छा है। यहा पहले वाक्य में विशेषण का पूर्व प्रयोग है। इसे उद्देश्यात्मक विशेषण या विशेषण-विशेष्य कहते है। दूसरे वाक्य में विशेषण का पर प्रयोग है। उसे विशेषण कहते हैं।

विशेषण संज्ञा शब्दों की विशेषता ही नहीं बताते, उनकी सीमा मर्यादित भी करते हैं- जैसेः- परिश्रमी बालक में बालक जो समस्त बालकों का सूचक है, 'परिश्रमी' जुड़ने से केवल परिश्रम करनेवाले बालकों की संख्या तक ही सीमित रह गया है। ऐसा केवल जातिवाचक संज्ञा के साथ होता है।

Unit 8.indd 32 23-06-2018 11:22:11

विशेषण के प्रकार

विशेषण के चार भेद हैं।

1. गुणवाचक विशेषण
2. संख्यावाचक विशेषण
3. परिमाणवाचक विशेषण
4. सार्वनामिक या संकेतवाचक विशेषण

1. गुणवाचक विशेषण :- जो विशेषण किसी पदार्थ के गुण, दोष, आदि बतलाता है, उसे 'गुणवाचक विशेषण' कहते हैं, जैसे - राम विद्वान है। अच्छा मकान है, सुंदर चित्र आदि।

यहाँ गुण का अर्थ केवल अच्छाई न होकर किसी भी विशेषण से हैं।

1. गुण	-	अच्छा, श्रेष्ठ, वीर
2. दोष	-	पापी, कपटी, कायर
3. रंग रूप	-	लाल, गोल, चौरस
4. आकार- प्रकार	-	लंबा, पतला, टेढ़ा
5. अवस्था	-	बलवान, रोगी, अमीर, भारी
6. स्वाद	-	मीठा, कड़वा, चटपटा
7. दिशा	-	पूर्वी, उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी
8. देश-काल	-	भारतीय, जापानी, पंजाबी
9. गंध	-	गंधहीन, सुगंधित, बदबूदार
10.स्पर्श	-	कोमल, कठोर, नर्म
11.भार	-	हलका, भारी, बज़नी
12.शारीरिक	-	अंधा, लँगड़ा, लूला

Unit 8.indd 33 23-06-2018 11:22:11

2. संख्यावाचक विशेषण :- जिन शब्दों से संज्ञा या सर्वनाम की गणना, क्रम, संख्या आदि का बोध हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे :- तीन लड़के, दसगुन लोग, सब लड़के आदि।

संख्यावाचक विशेषण में वस्तुओं आदि की गणना, क्रम, समूह, आवृत्ति आदि का समावेश पाया जाता है- जैसेः-

1. गणना	-	एक, दो, तीन, चार
2. क्रम	-	पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ
3. समूह	-	दोनों, तीनों, चारों, सैकड़ों, हज़ारों
4. आवृत्ति	-	दुगुना, तिगुना, चौगुना
5. प्रत्येक सूचक	-	हर घड़ी, प्रत्येक व्यक्ति, प्रतिवर्ष

संख्यावाचक विशेषण के दो भेद हैंः-

1. निश्चित संख्यावाचक विशेषण 2. अनिश्चित संख्यावचक विशेषण।

(1) निश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जो विशेषण एक निश्चित संख्या या क्रम के बोधक हों, उन्हें निश्चित संखयावाचक विशेषण कहते हैं - जैसे एक पुत्र, पॉच इंद्रियाँ, दसवाँ भाग।

(2) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण :- जिस विशेषण से विशेष्य की निश्चित संख्याका ज्ञान न हो, उन्हें अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे - 1. दो-चार छात्रों को बुला लो। 2. ज्यादा पैसे खर्च मत करो।

ध्यान देने की बात :- अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण न्यूनता या अधिकता का बोध कराता है।

(3) परिमाणवाचक विशेषण :- किसी वस्तु की माप-नाप-तोल संबंधी विशेषता बतानेवाले शब्दों को परिमाणवाचक विशेषण कहते है। जैसेः-

1. माप - चार मीटर कपड़ा,दस एकड़ ज़मीन,

2. नाप - एक लिटर दूध, 3. तौल - दो किलो चावल, एक क्विंटल गेहूँ।

Unit 8.indd 34 23-06-2018 11:22:11

परिणामवाचक विशेषण के भी दो भेद हैं। (1) निश्चित परिमाणवाचक, (2) अनिश्चित परिमाणवाचक।

(1) **निश्चित परिणामवाचक :-** इससे किसी वस्तु की निश्चित नाप तोल आदि का ज्ञान होता है। जैसेः- आधा किलो बादाम - दो बीधा ज़मीन।

(2) **अनिश्चित परिणामवाचक :-** इससे किसी वस्तु की निश्चित नाप-तौल आदि का ज्ञान नहीं होता। जैसेः- बहुत सारे सेब, थोड़ा भोजन, अधिक भार, कुछ दूध।

4. **संकेतवाचक विशेषण/सार्वनामिक विशेषण :-** जो शब्द संज्ञा शब्दों से पहले आकर उनकी ओर निर्देश (संकेत) करते हैं, उन्हें संकेतवाचक या सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे :- वह पुस्तक उपयोगी है। यह लड़का परिश्रमी है। वह गाय दूध देती है।

संकेतवाचक विशेषण में यह, वह आदि शब्द मूलतः सर्वनाम ही हैं। किंतु संज्ञा शब्दों के साथ आकर वे विशेषणात्मक हो जाते हैं, इसलिए इन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। उत्तम पुरुष तथा मध्यम पुरुष (मैं, तू, हम, आप) को छोड़कर शेष सभी सर्वनाम शब्द सार्वनामिक विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर :- जब सर्वनाम (यह, वह, इतना, उतना, कोई कितना आदि) शब्द अकेले आते हैं, अर्थात् संज्ञा शब्दों के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, तब सर्वनाम कहलाते हैं। जब इनके साथ संज्ञा आती है, अर्थात् ये संज्ञा शब्द से पहले आकर उनकी ओर संकेत करते हैं, तब सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं - जैसे :-

यह लड़का सुशील है, किंतु वह दुष्ट है। बगीचे में जितने फूल खिलते हैं उन्हें माली ले जाते हैं। इन वाक्यों में पहले प्रयोग में आये यह, जितने क्रमशः लड़का, फूल के साथ प्रयुक्त हुए हैं, अतः विशेषण हैं। और बाद में प्रयुक्त वह, उन्हें अकेले आये है, अतः सर्वनाम है।

विशेषण की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्दों को प्रविशेषण कहते हैं - जैसे :- तुमने बहुत अच्छा काम किया। इस वाक्य में 'अच्छा' विशेषण की विशेषता बताता है अतः वह प्रविशेषण है।

तुलना की दृष्टि से विशषणों की अवस्थाएँ :- तुलना की दृष्टि से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं। (1) मूलावस्था (2) उत्तरावस्था (3) उत्तमावस्था।

मूलावस्था :- जब विशेषता के द्वारा किसी पदार्थ के गुणादर्श को सामान्य रूप से प्रकट किया जाता है, तब उसे मूलावस्था कहते हैं। इसमें किसी प्रकार की तुलना नहीं होती । जैसे - राजेश चतुर लड़का है।

Unit 8.indd 35 23-06-2018 11:22:12

उत्तरावस्था :- इसमें दो पदार्थों की तुलना करते हुए विशेषण के द्वारा एक पदार्थ को अच्छा या बुरा बताया जाता है - जैसे :- राजेश मोहन से चतुर है।

उत्तमावस्था :- इसमें विशेषण के द्वारा एक पदार्थ की अनेक से तुलना करते हुए उसे सबसे अच्छा या सबसे बुरा बताया जाता है। जैसे :- राजेश सबसे चतुर लड़का है।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए:-

1. विशेषण किसे कहते हैं?

   संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्दों को विशेषण कहते हैं।

2. विशेषण कितने प्रकार के हैं?

   विशेषण चार प्रकार के हैं। 1. गुणवाचक 2.परिमाण वाचक 3. संख्यावाचक 4. सार्वनामिक

3. विशेषण का उदाहरण दीजिए:-

   अच्छा, झूठा, काला, सुनहरा, चमकीला, छोटा, गोल, खट्टा, नमकीन, कठोर, चिकना, सुगंधित, उत्तरी, पूर्वी, बीमार, बूढ़ा, भारतीय, प्राचीन, बासी।

4. विशेषण शब्द किसके बाद आता है?

   विशषण शब्द प्रायः विशेस्य से पहले आता है। अतः कभी-कभी विशेषण शब्द विशेस्य के बाद भी प्रयुक्त होते हैं।

5. विशेस्य किसे कहते हैं?

   संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता प्रकट करनेवाले शब्द विशेस्य कहते हैं।

6. विशेषता सूचक शब्द किसे कहते है?

   विशेषता सूचक शब्द विशेषण हैं।

7. उद्देश्य विशेषता किसे कहते है?

   विशेस्य से पहले आनेवाले विशेषण विशेस्य या उद्देश्य विशेषण कहलाते हैं।

Unit 8.indd 36 23-06-2018 11:22:12

8. विनयास के आधार पर विशेषण कितने प्रकार के हैं?

विनयास के आधार पर विशेषण दो प्रकार के होते है। 1. विशेष्य विशेषण 2. विधेय विशेषण

9. विशेषण के कितने भेद है?

विशेषण के चार भेद होते है। 1. गुणवाचक 2. परिमाण वाचक 3. संख्यावाचक 4. सर्वानामिक

10. विशेषण का अर्थ क्या है?

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं।

11. गुणवाचक विशेषण का उदाहरण दीजिए?

संज्ञा या सर्वनाम के गुण बतानेवाले शब्द को गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

12. परिमाण वाचक विशेषण किसे कहते हैं?

संज्ञा या सर्वनाम से किसी वस्तु के माप, तोल का बोध होता है उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

संवाद

1. योग शिक्षा के आवश्यकता पर दो मित्रों की बीच का वार्तालाप।

2. अपनी उच्च शिक्षा के बारे में छात्र-छात्राओं के बीच वार्तालाप।

3. ग्राहक और दूकानदार के बीच का संवाद।

पत्र लेखन

1. मातृभाषा की आवश्यकता को समझाते हुए अपने छोटे भाई को पत्र।

2. जन्मदिवस के उपलक्ष्य में आयोजित पार्टी का निमन्त्रण पत्र।

3. एशिया खेल में स्वर्ण पदक प्राप्त खिलाड़ी को बधाई पत्र।

Unit 8.indd 37 23-06-2018 11:22:12

TERM - 2

9 पद्य मधुमय देश हमारा

- जयशंकर प्रसाद



जयशंकर प्रसादजी का जन्म सन् 1890 ई. में वाराणासी के एक प्रतिष्ठित वैश्य परिवार में हुआ था। इनके पिता श्री देवी प्रसाद व्यापारी थे। माता-पिता की मृत्यु के कारण बाल्यकाल में ही इन्हें अपना पैतृक व्यवसाय संभालना पड़ा। इन्हें स्कूल में केवल आठवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त हुई थी। पालि, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं तथा उनके साहित्य का समुचित ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र और पुरातत्व के वे प्रकांड विद्वान थे। आपकी मृत्यु 1937 में हुई।

अरुण यह मधुमय देश हमारा!
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर मंगल कुंकुम सारा।
लघु सुरधनु से पंख पसोर शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनंत की पाकर जहाँ किनारा।
हेम कुंभ ले उषा सवेरे भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मदिर ऊँघते रहते हब जगकर रजनी भर तारा।

कठिन - शब्दार्थ

अरुण - लाल; मधुमय -मधुर, मीठा; क्षितिज - वह जगह, जहाँ जमीन और आसमान मिलते नज़र आते हैं; सहारा - आश्रय, आसरा; तामरस - सोना; विभा - प्रकाश, रोशनी;

Unit 9.indd 39 23-06-2018 11:23:23

तरुशिखा - पेड़ों की शाखाओं का अग्र भाग; सुरधुनु - इंद्र-धनुष; मनश - दक्षिण का पर्वत; समीर - हवा; खग - चिड़िया; नीड़ - घोंसला; अनंत - समुद्र; हेम - स्वर्ण, सोना; मदिर - मस्ती पैदा करनेवाला; रजनी - रात।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. मधुमय देश हमारा किस पर आधारित गीत है?
2. मधुमय देश हमारा की विशेषता बताइये?
3. कवि उड़ते खगों के पंखों की तुलना किससे करते हैं?
4. बरसाती बादल क्या बने है?
5. पद्य पूरा कीजिए।

   अ. अरुण यह मधुमय .....सहारा।।

   आ. हेम कुंभ ले उषा ..... रजनी भर तार।

6. "मधुमय देश हमारा" कविता का सारांश लिखिये।

Unit 9.indd 40 23-06-2018 11:23:23

10 पद्य तुलसी के दोहे



(गोस्वामी तुलसीदास का जन्म सोलहवीं शताब्दी में उत्तर प्रदेश के राजापुर नामक गाँव में हुआ। वे अपने समय के पहुँचे हुए विद्वान तथा महान संत थे। वे श्रीराम के अनन्य भक्त थे। उसी भक्ति से प्रेरित होकर उन्होंने 'रामचरित मानस' की रचना की। इस ग्रंथ ने गोस्वामी जी को अमर बना दिया। 'रामचरित मानस' के अलावा उन्होंने और भी कई ग्रंथ लिखे हैं।)

1. दया धर्म को मूल है, पाप मूल अभिमान।

   तुलसी दया न छाँडिए, जब लग घट में प्राण।।

2. पर सुख - संपति देखि सुनि, जरहि जे जड़ बिनु आगि।

   तुलसी तिन के भाग ले, चलै भलाई भागि।।

3. तुलसी काया खेत है, मनसा भये किसान।

   पाप पुण्य दोउ बीज है, बुबै सो लुनै निदान।।

4. गोधन, गजधन, बाजिधन और रतनधन - खान।

   जब आवै संतोष - धन, सब धन धूरि समान।।

5. आवत ही हरषै नही, नैनन नहीं सनेह।

   तुलसी तहाँ न जाइये, कंचन बरसे मेह।।

6. काम क्रोध मद लोभ की, जौलौ मन में खान।

   तौलौं पंडित मूरख सो, तुलसी एक समान।।

Unit 10.indd 41 23-06-2018 11:23:46

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. धर्म का मूल क्या है?
2. तुलसी किसे छोड़ने को कहते हैं?
3. तुलसी का भाग्य लक्षण क्या है?
4. हमें किन चीज़ों से दूर रहना चाहिए?
5. पंडित कैसे होना चाहिए।
6. भूख के लक्षण क्या-क्या है?
7. किस धन के प्राप्ति से सब धन धूरी बनता है?
8. तुलसी कहाँ जाने से मना करते हैं?
9. आवत ही हर्ष नहीं तो क्या करना चाहिए?

Unit 10.indd 42 23-06-2018 11:23:46

11 गद्य यंत्र मानव



मैं एक यंत्र मानव हूँ। मेरा शरीर हाड-माँस का नहीं, बल्कि लोहा-इस्पात और प्लास्टिक से बना है। मेरे भी टाँग, भुजा और अँगुलियाँ हैं। लेकिन मेरे ये सभी अंग धातुओं से बने हैं। न्-ार्जीव होते हुए भी मेरे सब अंग तुम्हारी ही तरह काम करते हैं। मैं चल सकता हूँ, उछल सकता हूँ और कूद भी सकता हूँ। तुम्हारी तरह अपने हाथों से, अँगुलियों से मैं मशीन के पुर्ज़े फ़िट कर सकता हूँ, बोझा उठा सकता हूँ और न जाने कितने काम कर सकता हूँ।

मेरे शरीर में तारों का जाल बिछा हुआ है और इन तारों में रक्त की जगह विद्युत धारा बहती है। यही विद्युत धारा मुझे काम करने की शक्ति देती है। काम करने के लिए मेरे पास मस्तिष्क है। लेकिन तुम्हारे मस्तिष्क से बिलकुल अलग। मेरा मस्तिष्क कंप्यूटर है। कंप्यूटर के आदेश के अनुसार मैं काम करता हूँ। देखने के लिए मेरे पास आँखे नहीं हैं, बल्कि मेरे शरीर में कैमरे लगे हैं। मेरे शरीर में लगा माईक्रोफोन ही सुनने का काम करता हैं। मेरे शरीर में लगा लाउड़स्पीकर बोलने का काम करता है। छूने का बोध मुझे विशेष प्रकार के स्पर्श संवेद्रियों द्वारा होता है। मैं भूखा, प्यासा, बिना कुछ खाये-पिये, सर्दी और गरमी में बिना थके और बिना ऊबे अकेला बीस-पच्चीस मज़दूरों के बराबर काम कर सकता हूँ।

Unit 11.indd 43 23-06-2018 11:24:08

यदि किसी भवन में आग लग जाए तो मैं बिना डरे और घबराए आग बुझाने के लिए उस भवन में प्रवेश कर सकता हूँ। वहाँ फँसे लोगों की जान बचा सकता हूँ। मैं ही मनुष्य के पहले चंद्रमा की सतह पर जाकर वहाँ की मिट्टी खोदकर लाया था। इसी प्रकार मंगल ग्रह की सतह पर जाकर वहाँ की लाल मिट्टी भी लाया था। मैं सिर्फ़ गंध का अनुभव नहीं कर सकता हूँ। मैं तुम्हारा ही खोज हूँ। तुम घर बैठे ही अपने कंप्यूटर द्वारा मुझे काम करने का आदेश दे दो और मैं तुम्हारी गैरहाज़िरी में तुम्हारा सारा काम कर दूँगा।

शब्दार्थ

यंत्र – मशीन; प्रवाह – बहाव; विद्युत – बिजली; संचित – इकट्ठा; तलहटी – समुद्र के नीचे की ज़मीन; दक्ष – योग्य, कुशल; भविष्य – आनेवाला समय; उपज – फसल।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. यंत्र मानव का शरीर किससे बना है?

2. यंत्र मानव किसके आदेश पर काम करता है?

3. यंत्र मानव कहाँ-कहाँ जाकर मिट्टी खोज लाया?

4. यंत्र मानव का स्वभाव कैसा है?

5. यंत्र मानव के शरीर में काम करने के लिए क्या यंत्र लगा है?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. यंत्र मानव क्या है? वह क्या-क्या कर सकता है?

2. यंत्र मानव की विशेषताओं को बताइये?

3. यंत्र मानव किससे बना है और उसे शक्ति किस प्रकार मिलती है?

III. "यंत्र मानव" पाठ का सारांश लिखिये।

Unit 11.indd 44 23-06-2018 11:24:08

12 गद्य हमारी राष्ट्रभाषा



आधुनिक हिंदी के निर्माता भारतेंदु बाबू हरिश्चंद्र की भाषा के संबंध में लिखी गयी ये पंक्तियाँ आज के दिन हमारे लिए एक अभूतपूर्व प्रेरणा का संदेश दे रही हैं।

निज़ भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।

बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटत न तन को सूल।।

वैसे यद्यपि हमारे देश के विभिन्न भागों में अनेक भाषाएँ बोली जाती हैं, फिर भी हिंदी हमारे देश की ऐसी भाषा है, जो प्रायः सारे देश में समान रूप से व्यवहार में लायी जाती है। उसके इस व्यापक रूप को समझाते हुए ही सारे देश ने इसे राष्ट्रभाषा के पावन अभिधान से अभिषिकत किया। इस विषय में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देशवासियों को उद्‌बोधित करते हुए एक बार ठीक ही कहा था।

जैसे अंग्रेज़ अपनी मातृभाषा अंग्रेज़ी में बोलते हैं और सर्वथा उसे ही व्यवहार में लाते हैं वैसे ही मैं आप से प्रार्थना करता हूँ कि आप हिंदी को भारतमाता की एक भाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिंदी सब समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा बनाकर हमें अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए।

Unit 12.indd 45 23-06-2018 11:24:27

गाँधीजी ने ही हिंदी को राष्ट्र की उन्नति का मूल समझकर यह घोषणा नहीं की थी, प्रत्युत उनसे पूर्व भी देश के कभी अंचलों के समाज सुधारकों संतों और नेताओं ने उसके महत्व को समझ लिया था। महाराष्ट्र में जहाँ ग्यारहवीं तथा बारहवीं शताब्दी में मराठी के आदि कवि मुकुन्दाराज और संत ज्ञानेश्वर ने इसके महत्व को समझा था, वहाँ कालांतर में गोपाल नरहरि देशपांडे तथा केशव वामन पेठे नामक महानुभावों ने क्रमशः सन् 1875 तथा 1876 में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का अभिनंदनीय प्रयास किया था। उन दिनों महादेव गोविंद रानडे तथा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने भी इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया था। इस प्रकार जहाँ महाराष्ट्र के ये संत सुधारक और नेता हिंदी के महत्व को समझकर उसके प्रचार में लगने लगे। जहाँ के सुधारक तथा नेता हिंदी की महत्व को समझकर उसके प्रचार में लगे हुए थे वहाँ नरसी महता मालण दयाराम तथा दलपत राज जैसे गुजराती कवियों ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से हिंदी के महत्व को स्वीकार किया था।

हिंदी को यह महत्व इसलिए नहीं दिया गया था कि वह सारी भारतीय भाषाओं में ऊँची है, बल्कि उसे राष्ट्रभाषा इसलिए कहा और समझा जाता है कि, हिंदी को जानने समझने और बोलने वाले देश के कोने-कोने में फैले हुए हैं। ये लोग चाहे हिंदी न जानते हों, व्याकरण की भूलें करते हों अशुद्ध हिंदी बोलते हों, परंतु बोलते हिंदी ही है और उसी में अपना भाव व्यक्त करते एवं दूसरों की बात समझते हैं। वास्तव में हिंदी की यह प्रकृति ही देश की परिचायक है और इस प्रकृति ने ही उसे इतना व्यापक रूप दिया है। वह केवल हिंदुओं या कुछ मुट्ठीभर लोगों की भाषा नहीं, वह तो देश के कोटि-कोटि कंठों की पुकार और उनका हृदयहार है।

हिंदी के सूत्र के सहारे कोई भी व्यंक्ति देश के एक कोने से चलकर दूसरे कोने तक जा सकता है और अपना काम चला सकता है। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदात्तता एवं एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिंदी में ही है। चाहे सब लोग हिंदी न जानते हों लेकिन फिर भी इस के द्वारा वे अपना काम चला लेते हैं और उन्हें इसमें कोई कठिनाई नहीं होती । भारत की बहु भाषिता के प्रश्न को उठाकर जो लोग हिंदी को राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण स्थान पर अधिष्ठित करने में रुकावट डाल रहे हैं वे यह कैसे भूल जाते हैं कि आज विश्व के सर्वाधिक शक्ति संपन्न देश रूस ने इस समस्या का किस प्रकार समाधान किया है। उन्हें यह मालूम होना चाहिए कि सोवियत संघ में यद्यपि 66 भाषाएँ बोली तथा लिख जाती है, किंतु फिर वहाँ की राष्ट्रभाषा रूसी ही है। सोवियत संघ की मंगोल और तुर्की भाषाओं के शब्दों का रूसी भाषा से कोई संबंध नहीं है। इसके विपरीत यहाँ की दक्षिण की भाषाओं के प्रायः 60 प्रतिशत शब्द मिल जाते हैं। तमिल को अपवाद के रूप में

Unit 12.indd 46 23-06-2018 11:24:27

रख सकते हैं। किंतु उसमें भी कुछ शब्द तो ऐसे मिल जाते हैं जिन्हें भारत की दूसरी भाषाओं के बोलनेवाले सरलता से समझ लेते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व हिंदी के ही माध्यम से भारत के अनेक संतों सुधारकों, मनीषियों और नेताओं ने अपने विचारों का प्रसार एवं प्रचार किया था। अपनी दूरदर्शिता के कारण उन्होंने ऐसी ही भाषा को अपनी भावधारा का साधन बनाया था। जो देश के सभी भूभागों के अधिकांश जन समुदाय को एकता के सूत्र में पिरो सकती थी और वह भाषा हिंदी थी। यही कारण था कि जहाँ उत्तर प्रदेश के कबीर, पंजाब के नानक, सिंध के सचल, काश्मीर के लल्लचंद, बंगाल के बदल, असम के शंकरदेव आदि संतों ने जिस सांस्कृतिक एकता को आधार बनाकर अपने काव्य की रचना की थी, वहाँ दक्षिण के वेमना, सर्वज्ञ, उल्लूर और आलवार आदि संतों की कविता की मूल भूमि भी वही थी, इनके संदेश में कहीं भी भाषागत विघटन का स्वर नहीं उभरा था, बल्कि सभी की रचनाएँ उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक समान रूप से समाद्वत हाती थी। जिन साधु बैरागियों के और अखाड़े सारे देश में फैले हुए थे उनमें भी कहीं भाषा का झगड़ा नहीं उठता था।

इसका निष्कर्ष यही है कि भाषाओं की वह विविधता देश की एकता में कहीं भी बाधक नहीं समझी जानी चाहिए। इस बिगहा पर पानी बदले, दस कोसल पर बानी के अनुसार पानी और वाणी की अनेक विविधता तो स्वभाविक ही है, किंतु बकीर ने जिस संस्कृत को कूप जल और जिस भाषा को बहता नीर कहा है वह भाषा निश्चय ही हिंदी है। इसी में उन्होंने अपना संदेश को दिया था और उसे वे एकता की कडी के रूप में देखते थे। भाषा वही महत्वपूर्ण होती है जो लोगों को तोड़ने के बजाय जोड़ने का संदेश दे और जिस के माध्यम से प्रेम का मार्ग प्रशस्त हो। इसी पावन भावना से प्रेरित होकर महाकवि जायसी ने यह कहा थाः

तुरकी अरबी, हिंदुई भाषा जेती आहि।

जेही महं मारग प्रेम का सवै सराहे ताहि।।

और यह प्रेम का मार्ग केवल हिंदी के माध्यम से ही प्रशस्त हो सकता है। यदि ऐसा न होता तो बंगाल के अद्विवतीय सुधारक राजा राम मोहन राय और केशवचंद्र सेन जैसे मनीषी अपने विचारों के प्रचार के लिए इसे क्यों अपनाते? आर्य समाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती और राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने गुजराती होते हुए भी राष्ट्रीयता और समाज सुधार की अपनी भावधारा को हिंदी के द्वारा ही सारे देश में फैलाया। "स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है" के जन्मदाता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने महाराष्ट्रीय होते हुए भी 1920

Unit 12.indd 47 23-06-2018 11:24:27

में बनारस में हिंदी में भाषण दिया था। उनका यह विचार वास्तव में हिंदी की व्यापकता का सुपुष्ठ प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। उन्होंने कहा था मेरी समझ में हिंदी भारत की सामान्य भाषा होनी चाहिए। जब एक प्रांत दूसरे प्रांत से मिले तो आपस में विचार विनिमय का माध्यम हिंदी ही होनी चाहिए। सामाजिक क्षेत्र में जहाँ अनेक सुधारकों द्वारा हिंदी को भारत की एकता का प्रमुख समझा जा रहा था, वहाँ महात्मा गाँधी के द्वारा उसके प्रचार और प्रसार को व्यापक बल मिला था।

हिंदी की सार्वजनिक उपयोगिता और महत्ता का इसी से पता चलता है कि इसे दूसरे प्रदेशों के निवासी नेताओं और विचारकों ने अपने विचारों को प्रकट करने का माध्यम बनाया था। आज दक्षिण के चारों राज्यों में हिंदी का जो सफल लेखन पठन और अध्यापन हो रहा है, उसमें भी राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी द्वारा स्थापित दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा जैसी अनेक संस्थाओं का अत्यधिक योगदान है। इसी प्रकार उड़ीसा, असाम तथा मेघालय में भी हिंदी का व्यापक प्रचार तथा प्रसार परिलक्षित होता है। विभाजन के उपरांत देश के विभिन्न आंचलों में फैले हुए सिंधी भाई भी किसी से पीछे नहीं है। आज के हिंदी के लेखन में भारत के सभी भाषा भाषियों का उल्लेखनीय योगदान है। श्रीमती सरोजिनी नायुडु ने हिंदी की महत्ता को स्वीकार करते हुए एक बार कहा था, देश के सबसे ज्यादा हिस्से में हिंदी ही लिखी जाती है। अगर हम साधारण बुद्धि से काम लें तभी हमें पता चलेगा कि हमारी कौमी जवान हिंदी ही हो सकती है। सुप्रसिद्ध मनीषी आचार्य क्षितिमोहन सेन ने भाषा को किसी भी देश की एकता का प्रधान साधन मानते हुए हिंदी की महत्ता की जो प्रतिष्ठापना की थी वह हमारे लिए उपेक्षणीय नहीं है। उन्होंने कहा था, अंग्रेज़ी भाषा की महिमा इसलिए नहीं है कि वह हमारे शासकों की भाषा थी बल्कि इसलिए है कि उसने संसार की समस्त विद्याओं को आत्मसात किया है। हिंदी को भी यह पद पाना है। उसे भी नाना विधाओं कलाओं और संस्कृतियों की त्रिवेणी बनना होगा। हिंदी में वह क्षमता है। बिना ऐसे बने भाषा की साधना अधूरी रह जायगी। भाषा हमारे लिये साधन है; साध्य नहीं। मार्ग है; गंतव्य नहीं। आधार है, आधेय नहीं।

आज राजनीति की आड लेकर जहाँ बंगाल में यदा-यदा हिंदी विरोध की जो आवाज़ उठ खड़ी होती वहाँ के निवासी यह कैसे भूल जाते हैं। कि अतीत काल में बंगाल ने हिंदी के संवर्धन और पल्लवन में बड़ा भारी योगदान दिया था। बंगाल के जहाँ राजा राममोहन राय ने अग्रदूत नामक पत्र हिंदी में सफलता पूर्वक प्रकाशित किया वहाँ वंदेमातरम्, राष्ट्रगान के अमर गायक बंकिम चंद्र चाटर्जी ने अपने बंग दर्शन नामक ग्रंथ के पांचवें खंड में स्पष्ट रूप से लिखा था - हिंदी भाषा की ऐक्य बंधन स्थापित कर सकेंगे वास्तव में वे ही सच्चे भारतीय कहलाने योग्य हैं। केवल यही नहीं बंगला वसुमति के संपादक श्री सुरेश चंद्र समाजपति और संध्या के संपादक पं.ब्रह्मबांधव उपाध्याय आदि ने भी अपने पत्रों में हिंदी की राष्ट्रभाषा संबंधी क्षमता को मुक्त कंठ से

Unit 12.indd 48 23-06-2018 11:24:27

स्वीकार किया था। सुप्रसिद्ध तत्व चिंतक श्री अरविंद घोष ने भी अपने कर्मयोगी और धर्म नामक पत्रों के माध्यम से राष्ट्रभाषा हिंदी के उन्नयन में अपना सहयोग देने में महत्वपूर्ण भूमिका का कार्य किया था। जहाँ बंग देश में उक्त सुधारक विचारक और चिंतक हिंदी संबंधी आंदोलन को आगे बढ़ा रहे थे, वहाँ श्री भूदेव मुखर्जी बिहार में तथा श्री नवीनचंद्र राय पंजाब में हिंदी प्रचार का कार्य कर रहे थे। प्रकाशन और मुद्रण के क्षेत्र में भी बंग भाषियों की सेवाएँ अविस्मरणीय है। श्री रामानंद चाटर्जी ने अपने प्रवासी प्रेस से जहाँ विशाल भारत जैसा उच्चकोटि का मासिक पत्र निकाला वहाँ श्री चिंतमणी घोष के इन्डियन प्रेस ने सरस्वती का प्रकाशन करके हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि में अभूत पूर्व योगदान दिया। बंगाल के ही सपूत श्री नागेंद्रनाथ बसु वह को श्रेय दिया जा सकता है कि उन्होंने 25 खंडों में विश्वकोश प्रकाशित करके हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि की थी।

अनेक बंग नेताओं द्वारा जहाँ राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में योगदान की दिशा में ऐसे महत्वपूर्ण कार्य हो रहे थे वहाँ जस्टिस शारदाचरण मिश्र ने एक लिपि विस्तार परिषद की स्थापना करके उसके द्वारा देवनागर नामक ऐसा पत्र प्रकाशित किया था कि जिसका उद्देश्य देवनागरी लिपि के माध्यम से समस्त भारतीय भाषाओं की कृतियों को प्रकाशित करके उसमें समन्वय स्थापित करना था। उनका यह भी अभिमत था कि यदि भाषाओं में से लिपि की दीवार को हटा दिया जाये और सब भाषाओं को देवनागरी लिपि में ही लिखने की परंपरा चल पड़े तो भारत की एकता अखंड रह सकेगी। वास्तव में यदि लिपि की बाधा को दूर कर दिया जाये और सारे देश की भाषायें देवनागरी को अपना लें तो हमारी सांस्कृतिक सामाजिक और साहित्यिक चेतना को बड़ा बल मिल सकेगा। पश्चिमी एशियाकी ताजिक और तुर्को भाषाओं ने जब अरबी लिपि को छोडकर रोमन लिपि को अपनाया तब वहाँ भी बड़े ही क्रांतिकारी परिवर्तन हुए थे। एक लिपि के माध्यम से हमारी एकता सर्वथा अक्षुण्ण रह सकेगी।

जिस हिंदी को जायसी, रहीम, रसखान, आलम, शेख और उस्मान जैसे मुस्लिम कवियों ने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, व केवल हिंदुओं की भाषा कही जा सकती है? खड़ीबोली के आदि कवि के रूप में जहाँ अमीर खुसरो ने हिंदी कविता को नये मुहावरे दिये वहाँ सैयद इन्शाअल्लाखाँ की "केतकी की कहानी" की रचना से हिंदी कहानी की विधा में एक अभूतपूर्व निखार आया है। हिंदी साहित्य में जहाँ उक्त विभूतियों का अपना महत्वपूर्ण स्थान है वहाँ आधुनिक काल में भी ऐसा अनेक नाम हमारे सामने उभर आते हैं। जिन्होंने जाति और धर्म की दीवार को तोड़कर साहित्य निर्माण के विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य किया था। ऐसे महानुभावों में सैयद अमीर अली, मीर कासिम अली साहित्यालंकार, बंदे अली, फातामी, जहूर बख्श कोविद और नवीन बख्श फलक आदि के नाम गौरव के साथ स्मरण किये जा सकते हैं।

Unit 12.indd 49 23-06-2018 11:24:27

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. हमारी राष्ट्रभाषा क्या है?
2. हिंदी की विशेषता क्या है?
3. हिंदी क्यों राष्ट्रभाषा बनी?
4. हिंदी भाषा कैसी है?
5. हिंदी किनकी भाषा है?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर तीन वाक्यों में लिखिये।

1. हिंदी भाषा के प्रमुख कवियों का नाम लिखिए।
2. हिंदी भाषा का उल्लेखनीय कार्य क्या है?
3. हिंदी के उन्नति में किनका योगदान रहा?
4. बंग दर्शन ग्रंथ में हिंदी के बारे में क्या लिखा है?
5. किन-किन नेताओं की भाषा हिंदी नहीं थी?

III निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. हिंदी की महिमा पर पाँच वाक्य लिखिए।
2. भाषा के बारे में कबीर ने क्या कहा?
3. राष्ट्रभाषा हिंदी के बारे में लेखक का क्या विचार था और क्या चाहते हैं?

Unit 12.indd 50 23-06-2018 11:24:27

13 कहानी गूँगे



– रांगेय राघव

'शकुंतला क्या नहीं जानती?'

'कौन? शकुंतला। कुछ भी नहीं जानती।'

'क्यों साहब? क्या नहीं जानती? ऐसा क्या काम है जो वह नहीं कर सकती?'

'वह उस गूँगे को नहीं बुला सकती।'

'अच्छा, बुला दिया तो?'

'बुला दिया!'

बालिका ने एक बार कहनेवाली की ओर द्वेष से देखा और चिल्ला उठी–दूँदे।

गूँगे ने नहीं सुना। तमाम स्त्रियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं। बालिका ने मुँह छिपा लिया।

जन्म से वज्र बहरा होने के कारण वह गूँगा है। उसने अपने कानों पर हाथ रखकर इशारा

Unit 13.indd 51 23-06-2018 11:24:56

किया। सब लोगों को उसमें दिलचस्पी पैदा हो गयी, जैसे तोते को राम-राम कहते सुनकर उसके प्रति हृदय में एक आनंदमिश्रित कुतूहल उत्पन्न हो जाता है।

चमेली ने अंगुलियों से इंगित किया–फिर?

मुँह के आगे इशारा करके गूँगे ने बताया–भाग गयी। कौन? फिर समझ में आया। जब छोटा ही था तब 'माँ' जो घुँघट काढ़ती थी, छोड़ गयी। क्योंकि 'बाप', अर्थात् बड़ी-बड़ी मूँछें, मर गया था। और फिर उसे पाला है–किसने? यह तो समझ में नहीं आया, पर वे लोग मारते बहुत हैं।

करुणा ने सबको घेर लिया। वह बोलने की कितनी ज़बर्दस्त कोशिश करता है। लेकिन नतीजा कुछ नहीं, केवल कर्कश काँय-काँय का ढेर। अस्फुट ध्वनियों का वमन, जैसे आदिम मानव अभी भाषा बनाने में जी-जान से लड़ रहा हो।

चमेली ने पहली बार अनुभव किया कि यदि गले में काकल तनिक ठीक नहीं हो तो मनुष्य क्या से क्या हो जाता है। कैसी यातना है कि वह अपने हृदय को उगल देना चाहता है, किंतु उगल नहीं पाता।

सुशीला ने आगे बढ़कर इशारा किया–मुँह खोल! और गूँगे ने मुँह खोल दिया। लेकिन उसमें कुछ दिखाई नहीं दिया। पूछा, गले में कौआ है, गूँगा समझ गया। इशारे से ही बता दिया–किसी ने बचपन में गला साफ़ करने की कोशिश में काट दिया और वह ऐसे बोलता है जैसे घायल पशु कराह उठता है, शिकायत करता है, जैसे कुत्ता चिल्ला रहा हो और कभी-कभी उसके स्वर में ज्वालामुखी के विस्फोट की-सी भयानकता थपेड़े मार उठती है। वह जानता है कि वह सुन नहीं सकता। और बता कर मुस्कुराता है। वह जानता है कि उसकी बोली को कोई नहीं समझता, फिर भी बोलता है।

सुशीला ने कहा–इशारे गज़ब के करता है। अक्ल बहुत तेज़ है। पूछा–खाता क्या है, कहाँ से मिलता है?

वह कहानी ऐसी है जिसे सुनकर सब स्तब्ध बैठे हैं। हलवाई के यहाँ रात भर लड्डू बनाए हैं, कढ़ाई माँजी है, नौकरी की है, कपड़े धोए हैं, सबके इशारे हैं, लेकिन–गूँगे का स्वर चीत्कार में परिणत हो गया। सीने पर हाथ मारकर इशारा किया–हाथ फैलाकर कभी नहीं माँगा, भीख नहीं लेता। भुजाओं पर हाथ रखकर इशारा किया–मेहनत का खाता हूँ, और पेट बजाकर दिखाया इसके लिए, इसके लिए।

Unit 13.indd 52 23-06-2018 11:24:56

अनाथाश्रम के बच्चों को देखकर चमेली रोती थी। आज भी उसकी आँखों में पानी आ गया। वह सदा से ही कोमल है। सुशीला से बोली–इसे नौकर भी तो नहीं रखा जा सकता।

पर गूँगा उस समय समझ रहा था। वह दूध ले आता है। कच्चा मंगाना हो, थन काढ़ने का इशारा कीजिए, औटा हुआ मँगाना हो, हलवाई जैसे एक बर्तन से दूध दूसरे बर्तन में उठाकर डालता है, वैसी बात कहिए। साग मँगाना हो गोल-मोल कीजिए या लंबी उँगली दिखाकर समझाइए,... और भी... और भी।

और चमेली ने इशारा किया–हमारे यहाँ रहेगा?

गूँगे ने स्वीकार तो किया, किंतु हाथ से इशारा किया–क्या दोगी? खाना?

'हाँ' चमेली ने सिर हिलाया।

'कुछ पैसे?'

चार उँगलियाँ दिखा दीं। गूँगे ने सीने पर हाथ मारकर जैसे कहा–तैयार हैं। चार रुपये।

सुशीला ने कहा–पछताओगी। भला यह क्या काम करेगा?

'मुझे तो दया आती है बेचारे पर,' चमेली ने उत्तर दिया–न हो, बच्चों की तबीयत बहलेगी।

घर पर बुआ मारती थी, फूफ़ा मारता था, क्योंकि उन्होंने उसे पाला था। वे चाहते थे कि बाज़ार में पल्लेदारी करे, बारह-चौदह आने कमा कर लाए और उन्हें दे दे, बदले में वे उसके सामने बाजरे और चने की रोटियाँ डाल दें। अब गूँगा घर भी नहीं जाता। यहीं काम करता है। बच्चे चिढ़ाते हैं। कभी नाराज़ नहीं होता। चमेली के पति सीधे-सादे आदमी हैं। पल जाएगा बेचारा, किंतु वे जानते हैं कि मनुष्य की करुणा की भावना उसके भीतर गूँगेपन की प्रतिच्छाया है, जब वह बहुत-कुछ करना चाहता है, किंतु कर नहीं पाता। इसी तरह दिन बीत रहे हैं।

चमेली ने पुकारा–गूँगे।

किंतु कोई उत्तर नहीं आया, उठकर ढूँढ़ा–कुछ पता नहीं लगा।

बसंता ने कहा–मुझे तो कुछ नहीं मालूम।

'भाग गया होगा', पति का उदासीन स्वर सुनाई दिया। सचमुच वह भाग गया था। कुछ भी समझ में नहीं आया। चुपचाप जाकर खाना पकाने लगी। क्यों भाग गया? नाली का कीड़ा। एक छत

Unit 13.indd 53 23-06-2018 11:24:56

उठाकर सिर पर रख दी फिर भी मन नहीं भरा। दुनिया हँसती है, हमारे घर को अब अजायबघर का नाम मिल गया है... किसलिए....

जब बच्चे और वह भी खाकर उठ गये तो चमेली बची रोटियाँ कटोरदान में रखकर उठने लगी। एकाएक द्वार पर कोई छाया हिल उठी। वह गूँगा था। हाथ से इशारा किया–भूखा हूँ।

'काम तो करता नहीं, भिखारी।' फेंक दी उसकी ओर रोटियाँ। रोष से पीठ मोड़कर खड़ी हो गयी। किंतु गूँगा खड़ा रहा। रोटियाँ छुई तक नहीं। देर तक दोनों चुप रहे। फिर न जाने क्यों गूँगे ने रोटियाँ उठा लीं और खाने लगा। चमेली ने गिलासों में दूध भर दिया। देखा, गूँगा खा चुका है। उठी और हाथ में चिमटा लेकर उसके पास खड़ी हो गयी।

'कहाँ गया था?' चमेली ने कठोर स्वर से पूछा।

कोई उत्तर नहीं मिला। अपराधी की भांति सिर झुक गया। झट से एक चिमटा उसकी पीठ पर जड़ दिया। किंतु गूँगा रोया नहीं। वह अपने अपराध को जानता था। चमेली की आँखों से दो बूँदें ज़मीन पर टपक गयीं। तब गूँगा भी रो दिया।

और फिर यह भी होने लगा कि गूँगा जब चाहे भाग जाता, फिर लौट आता। उसे जगह-जगह नौकरी करके भाग जाने की आदत पड़ गयी थी। और चमेली सोचती कि उसने उस दिन भीख ली थी या ममता की ठोकर को निस्संकोच स्वीकार कर लिया था?

बसंता ने कसकर गूँगे के चपत जड़ दी। गूँगे का हाथ उठा और न जाने क्यों अपने आप रुक गया। उसकी आँखों में पानी भर आया और वह रोने लगा। उसका रुदन इतना कर्कश था कि चमेली को चूल्हा छोड़कर उठ आना पड़ा। गूँगा उसे देखकर इशारों से कुछ समझाने लगा। देर तक चमेली उससे पूछती रही। उसकी समझ में इतना ही आया कि खेलते-खेलते बसंता ने उसे मार दिया था।

बसंता ने कहा–अम्मा! यह मुझे मारना चाहता था।

'क्यों रे?' चमेली ने गूँगे की ओर देखकर कहा। वह इस समय भी नहीं भूली थी कि गूँगा कुछ सुन नहीं सकता। लेकिन गूँगा भावभंगिमा से समझ गया। उसने चमेली का हाथ पकड़ लिया। एक क्षण को चमेली को लगा जैसे उसी के पुत्र ने आज उसका हाथ पकड़ लिया था। एकाएक घृणा से उसने हाथ छुड़ा लिया। पुत्र के प्रति मंगल-कामना ने उसे ऐसा करने को मज़बूर कर दिया।

Unit 13.indd 54 23-06-2018 11:24:56

कहीं उसका भी बेटा गूँगा होता तो वह भी ऐसे ही दुख उठाता। वह कुछ भी नहीं सोच सकी। एक बार फिर गूँगे के प्रति हृदय में ममता भर आई। वह लौटकर चूल्हे पर जा बैठी, जिसमें अंदर आग थी, लेकिन उसी आग से वह सब पक रहा था जिससे सबसे भयानक आग बुझती है–पेट कि आग, जिसके कारण आदमी गुलाम हो जाता है। उसे अनुभव हुआ कि गूँगे में बसंता से कहीं अधिक शारीरिक बल था। कभी भी गूँगे की भाँति शक्ति से बसंता ने उसका हाथ नहीं पकड़ा था। लेकिन फिर भी गूँगे ने अपना उठा हाथ बसंता पर नहीं चलाया।

रोटी जल रही थी। झट से पलट दी। वह पक रही थी, इसी से बसंता बसंता है.. गूँगा गूँगा है..

चमेली को विस्मय हुआ। गूँगा शायद यह समझता है कि बसंता मालिक का बेटा है, उस पर वह हाथ नहीं चला सकता। मन-ही-मन थोड़ा विक्षोभ भी हुआ, किंतु पुत्र की ममता ने इस विषय पर चादर डाल दी। और फिर याद आया उसने उसका हाथ पकड़ा था। शायद इसीलिए कि उसे बसंता को दंड देना ही चाहिए, यह उसको अधिकार है।

किंतु वह तब समझ नहीं सकी, और उसने सुना गूँगा कभी-कभी कराह उठता था। चमेली उठकर बाहर गयी। कुछ सोचकर रसोई में लौट आई और रात की बासी रोटी लेकर निकली।

'गूँगे।' उसने पुकारा।

कान के न जाने किस पर्दे में कोई चेतना है कि गूँगा उसकी आवाज़ को कभी अनसुना नहीं कर सकता, वह आया। उसकी आँखों में पानी भरा था। जैसे उनमें एक शिकायत थी, पक्षपात के प्रति तिरस्कार था। चमेली को लगा कि लड़का बहुत तेज़ है। बरबस ही उसके होठों पर मुसकान छा गयी। कहा–ले खा ले। – और हाथ बड़ा दिया।

गूँगा इस स्वर की, इस सबकी उपेक्षा नहीं कर सकता। वह हँस पड़ा। अगर उसका रोना एक अजीब दर्दनाक आवाज़ थी तो यह हँसना और कुछ नहीं – एक अचानक गुर्राहट-सी चमेली के कानों में बज उठी। उस अमानवीय स्वर को सुनकर वह भीतर-ही-भीतर काँप उठी। यह उसने क्या किया था? उसने एक पशु पाला था जिसके हृदय में मनुष्य की-सी वेदना थी।

घृणा से विक्षुब्ध होकर चमेली ने कहा–क्यों रे, तूने चोरी की है?

गूँगा चुप हो गया। उसने अपना सिर झुका लिया। चमेली एक बार क्रोध से काँप उठी, देर तक उसकी ओर घूरती रही। सोचा–मारने से यह ठीक नहीं हो सकता। अपराध को स्वीकार कराके दंड न देना ही शायद कुछ असर करे। और फिर कौन मेरा अपना है! रहना हो तो ठीक से रहे, नहीं तो फिर जाकर सड़क पर कुत्तों की तरह जूठन पर ज़िंदगी बिताए, दर-दर अपमानित

Unit 13.indd 55 23-06-2018 11:24:56

और लांछित...।

आगे बढ़कर गूँगे का हाथ पकड़ लिया और द्वार की ओर इशारा करके दिखाया – निकल जा।

गूँगा जैसे समझा नहीं। बड़ी-बड़ी आँखों को फाड़े देखता रहा। कुछ कहने को शायद एक बार होंठ भी खुले, किंतु कोई स्वर नहीं निकला। चमेली वैसे ही कठोर बनी रही। अबके मुँह से भी साथ-साथ – जाओ, निकल जाओ। ढंग से काम नहीं करना है तो तुम्हारा यहाँ कोई काम नहीं। नौकर की तरह रहना है रहो, नहीं, बाहर जाओ। यहाँ तुम्हारे नखरे कोई नहीं उठा सकता। किसी को भी इतनी फ़ुरसत नहीं है समझे?

और फिर चमेली आवेश में आकर चिल्ला उठी – मक्कार, बदमाश! पहले कहता था, भीख नहीं माँगता, और सबसे भीख माँगता है! रोज़-रोज़ भाग जाता है, पत्ते चाटने की आदत पड़ गयी है। कुत्ते की दुम क्या कभी सीधी होगी? नहीं। नहीं रखना है हमें, जा, तू इसी वक्त निकल जा ...

किंतु वह क्षोभ, वह क्रोध, सब उसके सामने निष्फल हो गये। जैसे मंदिर की मूर्ति कोई उत्तर नहीं देती, वैसे ही उस,ने भी कुछ नहीं कहा। केवल इतना समझ सका कि मालकिन नाराज़ हैं और निकल जाने को कह रही हैं। इसी पर उसे अचरज और अविश्वास हो रहा है।

चमेली अपने-आप लज्जित हो गयी। कैसी मूर्खा है वह। बहरे से जाने क्या-क्या कह रही थी? वह क्या कुछ सुनता है?

हाथ पकड़कर ज़ोर से एक झटका दिया और उसे दरवाज़े के बाहर धकेलकर निकाल दिया। गूँगा धीरे-धीरे चला गया। चमेली देखती रही।

करीब घंटेभर बाद शकुंतला और बसंता दोनों चिल्ला उठे – अम्मा! अम्मा!

'क्या है?' चमेली ने ऊपर ही से पूछा।

'गूँगा...' बसंता ने कहा। किंतु कहने के पहले ही नीचे उतरकर देखा–गूँगा खून से भीग रहा था। उसका सिर फट गया था। वह सड़क के लड़कों से पिटकर आया था, क्योंकि गूँगा होने के नाते वह उनसे दबना नहीं चाहता था।... दरवाज़े की दहलीज़ पर सिर रख वह कुत्ते की तरह चिल्ला रहा था....

और चमेली चुपचाप देखती रही, देखती रही कि उस मूक अवसाद में युगों का हाहाकार भरकर गूँज रहा है।

Unit 13.indd 56 23-06-2018 11:24:56

और ये गूँगे... अनेक-अनेक हो संसार में भिन्न-भिन्न रूपों में छा गये हैं जो कहना चाहते हैं पर कह नहीं पाते। जिनके हृदय की प्रतिहिंसा न्याय और अन्याय को परखकर भी अत्याचार को चुनौती नहीं दे सकती, क्योंकि बोलने के लिए स्वर होकर भी–स्वर में अर्थ नहीं है,... क्योंकि वे असमर्थ हैं।

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. गूँगे ने अपना परिचय लोगों को कैसे दिया?
2. गूँगे को बचपन में क्या हुआ?
3. गूँगे से काम कैसे लेना चाहिए?
4. मनुष्य की करुणा की भावना किसकी प्रतिच्छाया है?
5. चमेली गूँगे से किस प्रकार काम लेती थी?
6. परिवार के लोगों का बर्ताव गूँगे के साथ कैसा था?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. गूँगे का परिचय दीजिये?
2. चमेली का चरित्र चित्रण कीजिए।
3. चोट खाकर गूँगे ने क्या किया?
4. गूँगे कहानी की विशेषता लिखिए।

Unit 13.indd 57 23-06-2018 11:24:56

14 निबंध

भ्रष्टाचार

भ्रष्टाचार शिष्टाचार का उल्टा है। भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार है। भ्रष्टाचार का विभिन्न रूप रिश्वतः धूस, बेईमानी आदि है। सरकारी कार्यलायों में आजकल बिना रिश्वत दिए कुछ भी काम नहीं होता है। आराम की जिंदगी जीना भ्रष्टाचार सिखाता है। चपरासी से लेकर उच्च अधिकारी तक सब भ्रष्टाचार के आदि हैं।

भ्रष्टाचार हर किसी देश की जीने की कला बन गया है। सात्विक जीवन उच्च विचार सिर्फ़ नाम का हो गया है। बढ़ती हुई माँग ने मनुष्य को भ्रष्टाचार करने को विवश कर दिया है।

गलतियाँ को छिपाने, दण्ड से मुक्त, गलत-रास्ते को अपनाने दण्ड से निवर्त होने भ्रष्टाचार का मार्ग अपनाने लगे हैं। भ्रष्टाचार का उन्मूलन हमारा कर्तव्य होना चाहिए।

सरकार भ्रष्टाचार को बंद करने कठोर नियम बना रही है। जैसे काला-धन रोकने, व्यापारियों को नियमानुसार कर भरने, बचत व चालु खाते के जाँच बैंकों में आधार सख्या जोडने, नकद बंदी, जी.एस.टी. नियम लागु कराकर सबको सबसे कर लेना व भरना आदि विभिन्न नीतियों के द्वारा वर्तमान में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए उचित कदम उठा रही है।

हमें जनता को सरकार का साथ देना चाहिए। तभी भ्रष्टाचार से देश को बचा पायेंगे।

बच्चों से लेकर बूढ़ों तक अपना उल्लू सीधा करने के लिए भ्रष्टाचार पद्धति को अपनाते है। भगवान भी इसके अपवाद नहीं है। भगवान को भी रिश्वत का रूप, दान-दक्षिणा आदि देकर आत्मतृप्त होना मनुष्य का स्वभाव बन बैठा है। मनुष्यों में पलि हुई भ्रष्टाचार को शिष्टाचार द्वारा ही दूर कर सकते हैं।

काला धन काले बादल सा छा गये है। वर्तमान में सरकार की नीतियाँ ने इसके कुछ हद तक सफा चट कर दिया है। धनिक एवं व्यापारियों काला धन एक वरदान था जो आज उनके लिए अभिशाप बन गया है। सही मार्ग पर चलने की सोच रखनेवालों भ्रष्टाचार की नीति को अपनाता है। भ्रष्टाचार से देश की उन्नति में बाधा होती है ।

आत्मा-परमात्मा का संबंध भी भ्रष्टाचार में बदल गया है। वर-वधू का दहेज स्वरूप, छात्र-छात्राओं का विद्यालय प्रवेश में दान तथा सरकारी अनुदान प्राप्त करने कुछ प्रतिशत से कर्ज लेने, देकर व्यक्तियों को संतुष्ट करने पर ही कार्य पूरा होता है। कार्य साधना भ्रष्टाचार हो गया है। प्राचीनकाल से ही भ्रष्टाचार की परंपरा मानव जीवन में प्रचलित है। एकदम इसे हटा सकते हैं धीरे-धीरे यथा संभव हर क्षेत्र में विष सा फैले इस बीमारी से मुक्त करने का प्रयास करना चाहिए तभी असंभव-संभव होगा।

Unit 14.indd 58 23-06-2018 11:25:17

15 व्याकरण क्रिया

परिभाषा :- जिससे किसी कार्य का करना या होना पाया जाए, उसे क्रिया कहते हैं।

'क्रिया' शब्द का अर्थ है काम। क्रिया के बिना वाक्य पूर्ण नहीं होता। हिंदी में क्रिया प्रायः वाक्य के अंत में आती है। जैसेः-

पिताजी घर में हैं। रस्सी टूट गयी। सीता रोटी बना रहीं है।

क्रिया के मूल रूप को धातु कहते हैं, उपर्युक्त वाक्य में 'टूट' तथा 'बना' धातु हैं। क्रिया का एक सामान्य रूप होता है, जो धातु के पीछे 'ना' प्रत्यय लगाकर बनाया जाता है - जैसे :- कर से करना, भाग से भागना, खेल से खेलना आदि क्रिया के साधारण रूप हैं।

क्रिया के भेदः-

क्रिया के दो मुख्य भेद होते हैं। 1. सकर्मक क्रिया, 2. अकर्मक क्रिया।

1. सकर्मक क्रिया :- जिस क्रिया का व्यापार और फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर आश्रित हो, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे :- राम पुस्तक पढ़ता है। मोहन आम खा रहा है।

यहाँ पढ़ता है, खा रहा है, क्रियाएँ हैं। क्रिया के व्यापार का फल 'पुस्तक' और 'आम' पर पड़ रहा है। अतः 'पढ़ता है' व 'खा रहा है' ये क्रियाएँ सकर्मक हैं।

सकर्मक क्रिया को पहचानने का तरीका यह है कि क्रिया से 'क्या' अथवा 'किसे' प्रश्न करने पर यदि उत्तर मिल जाए तो वह सकर्मक क्रिया हो जाएगी। जैसे :- राम क्या पढ़ रहा है? उत्तर है, पुस्तक।

इस प्रकार कर्मवाली क्रिया सदैव सकर्मक क्रिया होती है।

2. अकर्मक क्रियाः- जिस क्रिया का व्यापार और फल कर्ता तक सीमित हो, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे :- श्याम जाता है। यहाँ 'जाता है' क्रिया के व्यापार का फल श्याम पर पड़ता है, अतः 'जाना' क्रिया अकर्मक क्रिया है।

सकर्मक क्रिया के दो भेद हैं - (1) एककर्मक क्रिया (2) द्विकर्मक क्रिया

Unit 15.indd 59 23-06-2018 11:25:38

(1) एककर्मक क्रियाः- जिन क्रियाओं में एक ही कर्म होता है, उन्हें एककर्मक क्रिया कहते हैं - जैसे :- बच्चा दूध पीता है, माली फूल तोड़ता है। पिताजी ने पत्र लिखा। 'पीता है', 'तोड़ता है', 'लिखा' क्रियाएँ एककर्मक हैं।

(2) द्विकर्मक क्रियाः- जिन सकर्मक क्रियाओं में दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते है। जैसे - दादी, बच्चों को कहानी सुनाती हैं। मित्र ने हमें चाय पिलायी। राम मोहन को पत्र लिखता है। यहाँ पहले वाक्य में बच्चों को तथा कहानी, दूसरे वाक्य में हमें और चाय, एवं तीसरे वाक्य में मोहन को और पत्र दो-दो कर्म हैं, अतः ये द्विकर्मक क्रियाएँ हैं। यहाँ विशेष ध्यान देने योग्य है कि द्विकर्मक क्रिया में एक कर्म मुख्य तथा दूसरा गौण होता है।

मुख्य कर्म और गौण कर्म को पहचानने के लिए क्रिया के साथ 'क्या' और 'किसको' प्रश्न कीजिए। 'क्या' के उत्तर में मुख्य कर्म आता है, जो प्रायः अप्रणिवाचक होता है और 'किसको' के उत्तर में गौण कर्म आता है, जो प्रायः प्राणिवाचक होता है।

इस प्रकार उक्त वाक्यों में, कहानी, चाय और पत्र मुख्य कर्म है तथा बच्चों को, हमें और मोहन को गौण कर्म हैं।

अकर्मक से सकर्मक बनाने के नियम

1. साधारणतया दो वर्णवाली कुछ धातुओं का अंतिम 'अ' को दीर्घ 'आ' कर देने से अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाती है। जैसे :-

धातु	अकर्मक	सकर्मक
चल	चलना	चलाना
गिर	गिरना	गिराना
डर	डरना	डराना

2. कभी-कभी दो वर्णवाली अकर्मक क्रियाओं के प्रथम स्वर को दीर्घ कर देने से भी सकर्मक क्रिया बनायी जाती है। जैसेः-

धातु	अकर्मक	सकर्मक
मर	मरना	मारना
कट	कटना	काटना
पिट	पिटना	पीटना

Unit 15.indd 60 23-06-2018 11:25:38

3. तीन वर्णवाली धातुओं के दूसरे स्वर को दीर्घ कर देने से भी सकर्मक क्रियाएँ बनायी जाती हैं। जैसे :-

धातु	अकर्मक	सकर्मक
उछल	उछलना	उछालना
सुधर	सुधरना	सुधारना

4. कभी-कभी धानु के प्रथम इकार को 'ए' और उकार को 'ओ' बना देने से भी सकर्मक क्रियाएँ बनती हैं। जैसे :-

धातु	अकर्मक	सकर्मक
घिर	घिरना	घिराना
तुल	तुलना	तोलना
खुल	खुलना	खोलना

5. कुछ धातुओं में उपर्युक्त परिवर्तनों के साथ 'ट' को 'ड़' कर देने से अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाती हैं। जैसे :-

धातु	अकर्मक	सकर्मक
फट	फटना	फाड़ना
फूट	फूटना	फोड़ना
छूट	छूटना	छोड़ना

6. कहीं-कहीं अकर्मक क्रियाओं का सकर्मक का रूप देने के लिए मूल रूप में बहुत परिवर्तन हो जाता है। जैसे :-

धातु	अकर्मक	सकर्मक
बिक	बिकना	बेचना
सो	सोना	सुलाना
चुभ	चुभना	चुभोना

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. क्रिया किसे कहते हैं? कितने प्रकार के हैं? उदाहरण क्या-क्या है?

2. अकर्मक क्रिया से सकर्मक क्रिया बताने का नियम बताइये।

Unit 15.indd 61 23-06-2018 11:25:38

2. क्रिया विशेषण

परिभाषा : जो अविकारी शब्द क्रिया की विशेषता का बोध कराते हैं, उन्हें क्रिया विशेषण कहते हैं।

जल्दी उठो, धीरे चलो, थोड़ा, ठहरो। इन वाक्यों में 'जल्दी, धीरे, थोड़ा' क्रमशः 'उठो, चलो और ठहरो' क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये क्रिया विशेषण हैं।

क्रिया विशेषण एक ऐसा प्रधान अव्यय (अविकारी) शब्द है, जिससे क्रिया की व्यापार-स्थिति तथा गुण संबंधी विशेषताएँ प्रकट की जाती है।

क्रिया विशेषण के भेदः-

अर्थ के आधार पर क्रिया विशेषण के चार भेद हैंः-

1.कालवाचक क्रिया विशेषण 2. स्थानवाचक क्रिया विशेषण

3.परिमाणवाचक क्रिया विशेषण 4. रीतिवाचक क्रिया विशेषण

1.कालवाचक क्रिया विशेषणः- जो अविकारी शब्द क्रिया के होने या करने का समय सूचित करते हैं, उन्हें कालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे :- उसे अभी बुलाओ, वह तुरंत चला जाए। तुम कब आये? इन वाक्यों में 'अभी', 'तुरंत', 'कब' क्रिया के समय का ज्ञान करने के कारण कालवाचक क्रिया विशेषण हैं।

2.स्थानवाचक क्रिया विशेषण :- जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के होने या करने के स्थान का बोध होता है, उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसेः- राम, आगे चलो, वह इधर-उधर देख रहा था। राम यहाँ नहीं रहता। इन वाक्यों में आगे, इधर-उधर, यहाँ क्रिया के स्थान का ज्ञान कराने के कारण स्थानवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

3.परिमाणवाचक क्रिया विशेषण :- जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के परिमाण (न्यूनता व अधिकता) का ज्ञान होता है, उन्हें परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं। जेसेः-

कमला, 'कुछ' कम ही बोलती है। 'जितना' चाहे ले लो। वह केवल मुझे जानती है।

इन वाक्यों में कुछ, जितना, केवल परिमाण (न्यूनता व अधिकता) का ज्ञान कराने के कारण परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण हैं।

4.रीतिवाचक क्रिया विशेषण :- जिन अविकारी शब्दों से क्रिया के होने की रीति या ढंग का बोध हो, उसे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं। जैसे :- सुशील 'मधुर' बोलता है। राम 'तेज़' दौड़ता है।

Unit 15.indd 62 23-06-2018 11:25:38

इन वाक्यों में 'मधुर' तथा 'तेज़' शब्द रीतिवाचक क्रिया विशेषण हैं, क्योंकि 'बोलना' तथा 'दौड़ना' क्रियाओं की रीति या ढंग संबंधी विशेषता बताते हैं।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1.क्रिया विशेषण किसे कहते हैं? कितने प्रकार के हैं? उदाहरण दीजिए?

3. ''ने" का प्रयोग

नियम -1. जब सकर्मक क्रिया का प्रयोग भूतकाल में होता है, तब कर्ता के साथ 'ने' जोड़ा जाता है।

नियम -2. भूतकाल में प्रयुक्त सकर्मक क्रिया का रूप कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होता है। जैसे–

राम ने एक रोटी खायी। **सीता ने एक फल खाया।**

राम ने दो रोटियाँ खायीं। **सीता ने दो फल खाये।**

नियम -3. 'ने' का प्रयोग भूतकाल के इन चार भेदों में होता है।

1. सामान्य भूतकाल : राम ने रोटी खायी। सीता ने फल खाया।
2. आसन्न भूतकाल : राम ने रोटी खायी है। सीता ने फल खाया है।
3. पूर्ण भूतकाल : राम ने रोटी खायी थी। सीता ने फल खाया था।
4. संदिग्ध भूतकाल : राम ने रोटी खायी होगी। सीता ने फल खाया होगा।

नियम - 4. ला, बोल, भूल, मिल- इन सकर्मक क्रियाओं के कर्ताओं के साथ 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

जैसे- राम किताब लाया। राम अध्यापक से मिला।

राम किताब लाना भूला। राम सभा में बोला।

विशेष : लग, सक, चुक, होना, पड़ना- इन सहायक क्रियाओं के प्रयोग में सारे मूल क्रिया सकर्मक हो, कर्ता के साथ 'ने' नहीं जोड़ा जाता।

जैसे– राम खाना खाने लगा। राम खा चुका। राम जल्दी खा सका, आदि।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. "ने" का नियम बताइये ।

Unit 15.indd 63 23-06-2018 11:25:38

TERM - 3

16 पद्य

माँ

- श्री ठाकुर गोपाल शरण सिंह



आप रीवाँ के नईगढ़ी नामक इलाके के जागीरदार थे। मानव की कोमल भावनाओं का सरस वर्णन करने में आप सिद्धहस्त है। 'मानव', 'ज्योतिष्मती', 'ग्रामिका' आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाये हैं।

इस कविता में कवि ने अपनी मातृभूमि के वात्सल्य रस का सुंदर वर्णन किया है। उन्होंने अपनी जन्म-भूमि को संबोधित कर कहा कि हे माँ! निस्सहाय और भूखे संसार को देखकर तेरा हृदय पिघल जाता है। इसीलिए तेरे उर से दूध की धारा बहती रहती है।

है जग - जीवन की जननी तू
तेरा जीवन ही है त्याग;
है अमूल्य वैभव वसुधा का
तेरा मूर्तिमान अनुराग।

कितनी घोर तपस्या करके
पाती है तू यह वरदान?
किन्तु विश्व को अनायास ही
कर देती है उसे प्रदान।

है तुझसे ही लालित -पालित
यह भोला - भाला संसार
करती है प्लावित वसुधा को
तेरी प्रेम -सुधा की धार।

तेरे दिव्य हृदय में जिसका
रहता है सदैव संसार

Unit 16.indd 65 23-06-2018 11:25:58

लिये अंक में मृदुल सुमन को

लता दिखाती है वह प्यार।

तेरी करुण साधना का माँ

है मातृत्व स्वयं उपहार

क्षुधित देख असहाय विश्व को

बहती है उर से पयधार।

कठिन - शब्दार्थ

धूल - धूसरित - धूल से लिपटा हुआ; प्लावित - प्रवाह में डूबा हुआ; गोदी का जाल - प्रिय पुत्र; मृदुल - सुकुमार, कोमल; जलज - कमल ; उपहार -पुरस्कार; बाहु मृणाल -कमल नाल जैसी वाहु; क्षुधित - भूखा; लालित-पालित - पाला पोसा गया ; पयधार - दूध की धारा

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. श्री ठाकुर गोपालशरण सिंह के बारे में लिखिये।
2. माँ की महिमा बताइये।
3. माँ का जीवन कैसा है?
4. माँ किस प्रकार वरदान प्राप्त करती है।

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर तीन वाक्यों में लिखिये।

1. माँ का स्वभाव कैसा है?
2. माँ किसकी मूर्ति है?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. माँ के प्यार के बारे में लिखिये।
2. माँ कविता द्वारा कवि क्या कहना चाहते हैं?
3. "माँ" कविता का सारांश लिखिए।

Unit 16.indd 66 23-06-2018 11:25:58

17 पद्य ठुकरा दो या प्यार करो।



सुभद्राकुमारी चौहान (1905-1948) का जन्म प्रयाग जिले के निहालपुर गाँव में हुआ था। इन्होंने प्रयाग में ही शिक्षा ग्रहण की। सन् 1921 में असहयोग-आन्दोलन के प्रभाव से इन्होंने शिक्षा अधूरी ही छोड़ दी और ये राजनीति में भाग लेने लगीं। स्वाधीनता संग्राम में सक्रिय भाग लेने के कारण इन्हें कई बार जेल जाना पड़ा। काव्य-रचना की ओर इनकी प्रवृत्ति विद्यार्थी-काल से ही थी। अपनी ओजस्वी कविताओं के कारण सुभद्राकुमारी चौहान को भारत भर में लोकप्रियता प्राप्त हुई।

इनकी कविताएँ 'त्रिधारा' और 'मुकुल' में संकलित हैं। भाव की दृष्टि से इनकी कविताओं को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम वर्ग में राष्ट्र-प्रेम की कविताएँ रखी जा सकती हैं जिनमें इन्होंने असहयोग या स्वतंत्रता की लड़ाई में भाग लेनेवाले वीरों को अपना विषय बनाया है। इनकी 'झाँसी की रानी' कविता जनता में बहुत लोकप्रिय हुई। दूसरे वर्ग के अन्तर्गत वे कविताएँ रखी जा सकती हैं जिनकी प्रेरणा इन्हें अपने पारिवारिक जीवन से प्राप्त हुई। ऐसी कविताओं में कुछ तो पति-प्रेम की भावना से अनुप्राणित हैं और कुछ में सन्तान के प्रति वात्सल्य की सहज एवं मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। इनकी भाषा शैली भावों के अनरूप सरलता और गति लिये हुए है।

Unit 17.indd 67 23-06-2018 11:26:28

श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान

देव! तुम्हारे कई उपासक
कई ढंग से आते हैं।
सेवा में बहुमूल्य भेंट वे
कई रंग की लाते हैं।।

धूमधाम से साजबाज से
मंदिर में वे आते हैं।
मुक्तामणि बहुमूल्य वस्तुएँ
लाकर तुम्हें चढ़ाते हें।।

मैं ही हूँ गरीबिनी ऐसी
जो कुछ साथ नहीं लायी।
फिर भी साहस कर मंदिर में
पूजा करने चली आयी।।

धूप दीप नैवेद्य नहीं है
झाँकी का श्रृंगार नहीं।
हाय! गले में पहनाने को
फूलों का भी हार नहीं।।

मैं कैसे स्तुति करूँ तुम्हारी?
है स्वर में माधुर्य नहीं।
मन का भाव प्रकट करने को
बाणी में चातुर्य नहीं।।

Unit 17.indd 68 23-06-2018 11:26:28

नहीं दापन है, नहीं दक्षिणा

खाली हाथ चली आयी।

पूजा की विधि नहीं जानती

फिर भी नाथ! चली आयी।।

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. सुभद्राकुमारी भगवान से क्या कहती है?
2. कवियत्री की दशा क्या है?
3. कवियत्री का स्वर में क्या नहीं था?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर तीन वाक्यों में लिखिये।

1. देव के उपासक मंदिर में कैसे आते हैं?
2. कवियत्री अपना परिचय कैसे देती है?
3. कवियत्री भगवान से क्या अपेक्षा रखती है?
4. देव के उपासक पूजा के लिए क्या-क्या लाते है?
5. कवियत्री की भावना और अनुभूति का परिचय लिखिए?

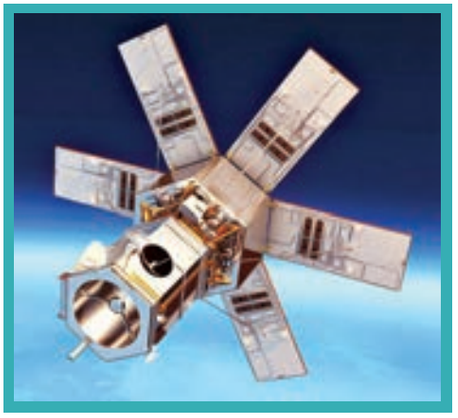
III. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. देव के उपासक भगवान को खुश करने किन-किन विधियों का अपनाते है?

IV. "ठुकरा दो या प्यार करो" कविता का सारांश लिखिये।

Unit 17.indd 69 23-06-2018 11:26:28

18 गद्य कृत्रिम उपग्रह



मनुष्य की खोज में कृत्रिम - उपग्रह एक है। ग्रहों की परिक्रमा करनेवाले आकाशीय पिंडों को उपग्रह कहते हैं। उनमें प्रमुख बृहस्पति, शुक्र, शनि और मंगल आदि हैं। अंतरिक्ष को भेजा गया मानवनिर्मित कृत्रिम उपग्रह क्रमशः रूस का स्पूतनिक-1, अमेरिका का एक्स्प्लोरर तथा भारत का आर्यभट्ट और भास्कर-1, राहिणी, ऐप्पल और भास्कर-2 आदि है।

इसी सिलसिले में भारतीय राष्ट्रीय उपग्रह प्रणाली के अंतर्गत इन्सेट-ए, इन्सेट-बी आदि उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़े गये। उपग्रहों की सहायता से हमारे देश की संचार-व्यवस्था में बहुत लाभ हुआ है। कृत्रिम उपग्रहों को रॉकेटों की सहायता से अंतरिक्ष में भेजा जाता है। उपग्रह से संदेशों को प्राप्त करने के लिए एक रिसीवर होता है। उसकी शक्ति बढ़ाने के लिए एम्प्लिफयर होता है और संदेशों को वापस भेजने के लिए एक ट्रांस्मीटर होता है।

संचार उपग्रह द्वारा मुख्य रूप से टेलीफोन, रेडियो और टेलीविजन संदेश धरती के एक स्थान से दूसरे स्थान तक भेजे जाते है। जब हमें कोई टेलीफोन या टेलीविजन संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजना होता है तो उस संदेश को उच्च आवृति की सूक्ष्म तरंगों की सहायता से पृथ्वी के किसी निश्चित संचार केंद्र से उपग्रह की ओर भेजते है। ये संदेश उपग्रह में लगे एंटीना द्वारा ग्रहण किये जाते हैं। और रिसीवर को भेज दिये जाते हैं। फिर उपग्रह में लगा ट्रांसमीटर इस संदेशों को पृथ्वी के एक निश्चित भाग की ओर भेजता है। जिन्हें वहाँ पर लगा रिसीवर प्राप्त कर लेता है। इस प्रकार एक देश का टेलीफोन या टेलीविजन-सिग्नल दूसरे देश या दूसरे स्थान पर प्राप्त कर लिया जाता है।

ये कृत्रिम उपग्रह आज के युग में किसी देश की प्रगति के सूचक है। इन उपग्रहों के माध्यम से हम पृथ्वी के बारे में भी अनेक प्रकार की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। इन उपग्रहों के द्वारा ही हम पृथ्वी पर जल, खनिज पदार्थ मौसम आदि की जानकारी के साथ-साथ दूसरे देशों के रक्षा कार्यों के लिए किए गए प्रयासो का भी पता लगा सकते हैं। इसके अलावा इन उपग्रहों की सहायता से हम घर बैठे-बैठे दुनिया भर के टेलीविजन कार्यक्रम देख सकते हैं। भविष्य में

Unit 18.indd 70 23-06-2018 11:26:46

यह भी संभव हो सकता है कि हम अंतरिक्ष में एक मकान बना सके। तब हम भी कभी वहाँ रहकर मजा लेंगे।

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. मनुष्य की आधुनिक खोज क्या है?
2. किसकी सहायता से कृत्रिम उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजा जाता है?
3. किनके माध्यम से धरती के एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश भेजे जाते हैं?
4. संदेश किसके द्वारा ग्रहण किए जाते हैं?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो वाक्यों में लिखिये।

1. उपग्रह किसे कहते हैं?
2. मानव-निर्मित कृत्रिम उपग्रह क्या-क्या है?
3. उपग्रहों से क्या लाभ है?

III निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. टेलिफोन या टेलिविजन सिग्नल किस प्रकार प्राप्त किया गया जाता है?
2. कृत्रिम उपग्रह किसका सूचक है?
3. उपग्रहों का कार्य संक्षेप में लिखिए।
4. कृत्रिम उपग्रहों की सहायता से भविष्य की संभावनाये क्या है?

IV. "कृत्रिम उपग्रह" पाठ का सारांश लिखिए।

Unit 18.indd 71 23-06-2018 11:26:46

19 गद्य आओ पेड़ लगाएँ



पेड़ लगाना हर आदमी की एक सामाजिक जिम्मेदारी है। आजकल लोग पेड़-पौधों को धड़ाधड़ काटते जा रहे हैं। इसलिए हमारे देश में बहुत से घने जंगल उजड़ते जा रहे है। लोग पेड़ों को काट-काटकर शहरों की सड़कों को चौड़ा कर रहे हैं। सड़कों के किनारे वाले छायादार पेड़ कम होते जा रहे हैं। बाग-बगीचे कट रहे है और उनकी जगह बड़ी-बड़ी इमारतें बन रही है। जगह-जगह नये-नये कारखाने खुल रहे हैं। इससे हमें आधुनिक सुविधाएँ तो मिल रही है, लेकिन हमारे देश के मौसम पर बुरा असर पड़ रहा है। हरे-भरे और ऊँचे-ऊँचे पेड़ बादलों को अपनी तरफ़ खींचते है। इससे ठीक समय पर वर्षा होती है। फसल अच्छी होती है। नदी-नालों में पानी भरा रहता है। बारिश के पानी का बहाव जमीन की उपजाऊ मिट्टी को अपने साथ बहाकर नहीं ले जा सकता। पेड़-पौधे हवा को शुद्ध करते हैं। आजकल मोटर गाडियों की संख्या से निकलनेवाला धुआँ और कल कारखानों की चिमनियो से निकलनेवाला धुआँ हवा को अशुद्ध कर रहा है। आज पेड़-पौधों की कमी के कारण हमें साफ़ हवा नहीं मिल रही। दूषित हवा को साफ करने के लिए हरे-भरे पेड़ों की बड़ी आवश्यकता है।

ठीक समय पर वर्षा होने, खेतों की उपजाऊ मिट्टी के बहाव को रोकने और वातावरण को स्वच्छ रखने के लिए लोग जगह-जगह पेड़ लगा रहे हैं। वृक्षारोपन धरती को हरा-भरा बनाने के काम में आज सभी जुटे हुए हैं।

वर्षा – बारिश; वृक्ष – पेड़; वायु – हवा; ज़रूरत – आवश्यकता; स्वच्छ – साफ़-सुथरा; दुनिया – संसार; कर्तव्य – फ़र्ज; इमारत – भवन; बगीचा – उपवन; पशु – जानवर; बहाव – प्रवाह; वृक्षारोपण – पौधे लगाना।

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखिए:-

1. आदमी की सामाजिक जिम्मेदारी क्या है?
2. आजकल लोग धड़ाधड़ क्या करते हैं?
3. जंगल क्यों उजडते जा रहे हैं?

Unit 19.indd 72 23-06-2018 11:27:05

4. शहरों को चौडा करने लोग क्या कर रहे हैं?

5. पेड़ों को काटने से नतीज क्या बनाता है?

6. आधुनिक सुविधा मनुष्य को क्या बनाता है?

7. वर्षा कब होती है?

8. पेड़ पौधों से क्या लाभ है?

9. पर्यावरण कैसा होना चाहिए।

10. पेड़ पौधों की कमी से क्या हानी है।

11. "आओ पेड़ लगाये" पाठ का सारांश लिखिए?

Unit 19.indd 73 23-06-2018 11:27:05

20 कहानी छोटा जादूगर



मैंने पूछा - और उस परदे में क्या है? वहाँ तुम गए थे?"

"नहीं, मैं नहीं जा सका। टिकट लगता है।"

मैंने कहा - तो चलो मैं वहाँ पर तुमको लिवा चलूँ। मैंने मन ही मन कहा - "भाई! आज के तुम ही मित्र रहे।"

उसने कहा - "वहाँ जाकर क्या कीजिएगा? चलिए निशाना लगाया जाए।"

मैंने उससे सहमत होकर कहा - "तो चलो पहले शरबत पी लिया जाए।" उसने हाँ के बहाने सिर हिला दिया।

मनुष्यों की भीड़ से जाड़े की संध्या भी वहाँ गर्म हो रही थी। हम दोनों शरबत पीकर निशाना लगाने चले। राह में ही उससे पूछा - "तुम्हारे और कौन हैं"?

"माँ और बाबूजी"।

"उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?"

"बाबूजी जेल में हैं।"

"क्यों"?

"देश के लिए।" - वह गर्व से बोला।

"और तुम्हारी माँ?"

"वह बीमार है"।

"और तुम तमाशा देख रहे हो?"

उसके मुँह पर तिरस्कार की हँसी फूट पड़ी। उसने कहा - "तमाशा देखने नहीं, दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक तसल्ली होती।"

मैं आश्चर्य से उस तेरह-चौदह वर्ष के लड़के को देखने लगा।

Unit 20.indd 74 23-06-2018 11:27:51

"हाँ, मैं सच कहता हूँ बाबूजी। माँ जी बीमार हैं; इसलिए मैं नहीं गया।"

"कहाँ"?

"जेल में! जब कुछ लोग खेल-तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा करूँ और अपना भी पेट भरूँ।"

मैंने दीर्घ निःश्वास लिया। चारों ओर बिजली के लट्टू नाच रहे थे। मन व्यग्र हो उठा। मैंने उससे कहा - "अच्छा चलो, निशाना लगाया जाए।"

हम दोनों उस जगह पर पहूँचे, जहाँ खिलौनों को गेंद से गिराया जाता था। मैंने बारह टिकट खरीदकर उस लड़के को दिए।

वह निकला पक्का निशानेबाज। उसकी कोई गेंद खाली नहीं गई। देखनेवाले दंग रह गए। उसने बारह खिलौनों को बटोर लिया; लेकिन उठाता कैसे? कुछ मेरे रूमाल में बँधे, कुछ जेब में रख लिए गए।

लड़के ने कहा - "बाबूजी, आपको तमाशा दिखलाऊँगा। बाहर आइए। मैं चलता हूँ।

वह नौ दो ग्यारह हो गया। मैंने मन ही मन कहा - इतनी जल्द आँख बदल गई।"

मैं घूमकर पान की दूकान पर आ गया। पान खाकर बड़ी देर तक इधर-उधर टहलता देखता रहा। झूले के पास लोगों का ऊपर-नीचे आना देखने लगा। आकस्मात् किसी ने ऊपर के हिंडोले से पुकारा - बाबूजी!"

मैंने पूछा - "कौन"?

"मैं हूँ, छोटा जादूगार।"

(2)

कल्कत्ता के सुंदा बोटानिकल-उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी-सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मंडली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था। बाते हो रही थीं। इतने में वही छोटा जादूगर दिखाई पड़ा। हाथ में चारखाने की खादी का झोला, साफ़ जाँघिया और आधी बाँहों का कुरता। सिर पर मेरा रूमाल सूत की रस्सी से बँधा हुआ था। मस्तानी चाल से झूमता हुआ आकर कहने लगा -

"बाबूजी नमस्से! आज कहिए तो खेल दिखाऊँ।"

"नहीं जी, अभी हम लोग जलपान कर रहे हैं"।

Unit 20.indd 75 23-06-2018 11:27:51

"फिर इसके बाद गाना - बजाना होगा, बाबूजी?"

"नहीं जी - तुमको..... " मैं क्रोध में कुछ और कहने जा रहा था; श्रीमतीजी ने कहा - "दिखलाओ जी, तुम तो अच्छे आए। भला कुछ मन तो बहले।" मैं चुप हो गया; क्योंकि श्रीमतीजी की बोली में वह माँ की - सी मिठास थी, जिसके सामने किसी भी लडेके को रोका नहीं जा सकता। उसने खेल आरंभ किया।

उस दिन कार्निवल से सब खिलौने उसके खेल में अपना अभिनय करने लगे। भालू मनाने लगा। बिल्ली रूठने लगी। बंदर घुड़कने लगा। गुड़िया का ब्याह हुआ। गुड्डावर काना निकला। लड़के की बातों से ही खेल हो रहा था। सब हँसते-हँसते लोट-पोट हो गए।

मैं सोच रहा था। बालक को ज़रूरतों ने कितना शीघ्र चतुर बना दिया। यही तो संसार है।

ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े-टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने से नाच रहे थे। मैंने कहा- "अब हो चुका। अपना खेल बट ोर लो, हम लोग भी अब जाएँगे।"

श्रीमतिजी ने धीरे से उसे एक रुपया दे दिया। वह उछल उठा।

मैंने कहा - "लड़के"

"छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसीसे मेरी जीविका है।"

मैं कुछ बोलना ही चाहता था कि श्रीमति जी ने कहा - "अच्छा तुम इस रुपये से क्या करोगे?"

"पहले भरपेट पकौड़ी खाउँगा। फिर एक सूती कम्बल लूँगा।" मेरा क्रोध अब लौट आया। मैं अपने पर बहुत क्रुद्ध होकर सोचने लगा - ओह! कितना स्वार्थी हूँ मैं। उसके एक रूपया पाने पर मैं ईर्ष्या करने लगा था न।

वह नमस्कार करके चला गया। हम लोग लता-कुंज देखने के लिए चले। उसे छोटे से बनावटी जंगल में संध्या साँय-साँय करने लगी थी। डूबते हुए सूर्य की अंतिमकिरण पेड़ों की पत्तियों से विदाई ले रही थी। चारों ओर सुनसान था। हम लोग धीरे-धीरे मोटर से हावड़ा की ओर आ रहे थे।

रह-रहकर छोटा जादूगर स्मरण हो जाता था। सचमुच पह एक झोंपड़ी के पास कंबल कन्धे पर डाले खड़ा था। मैंने मोटर रोक्कर उससे पूछा - "तुम यहाँ कहाँ?"

"मेरी माँ यहीं हैं न। अब उसे अस्पतालवालों ने निकाल दिया है।" मैं उतर गया। उस

Unit 20.indd 76 23-06-2018 11:27:51

झोंपड़ी में देखा, तो एक स्त्री चिथड़ों से लदी हुई काँप रही थी।

छोटे जादूगर ने कंबल ऊपर डालकर उसके शरीर से चिपटते हुए कहा - माँ।

मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े।

(3)

बड़े दिन की छुट्टी बीत चली थी। मुझे अपने आफिस में समय से पहुँचना था। कलकत्ता से मन ऊब गया। फिर भी चलते-चलते एक बार उस बाग को देखने की इच्छा हुई। साथ ही साथ जादूगर भी दिखाई पड़ जाता, तो और भी ..... मैं उस दिन अकेले ही चल पड़ा। जल्द लौट आना था।

दस बज चुके थे। मैंने देखा कि उस साफ धूप में सड़क के किनारे एक कपड़े पर छोट जादूगर का रंगमंच सजा था। मोटर रोक्कर उतर पड़ा। वहाँ बिल्ली रूठ रहीं थी भालू मनाने चला था, ब्याह की तैयारी थी, पर सब होते हुए भी जादूगर की वाणी में वह प्रसन्नता की तरी नहीं थी। जब वह औरों को हँसाने की चेष्टा कर रहा था, तब जैसे स्वयं काँप जाता था। मानो उसके रोएँ रो रहे थे। मैं आश्चर्य से देख रहा था। खेल हो जाने पर पैसा बटोरकर उसने भीड़ में मुझे देखा। वह जैसे क्षण-भर के लिए स्फूर्तिमान हो गया। मैंने उसकी पीठ थपथपाते हुए पूछा - आज तुम्हारा खेल जमा क्यों नहीं?

"माँ ने कहा है कि आज तुरंत चले आना। मेरी घड़ी समीप है।" अविचल भाव से उसने कहा।

"तब भी तुम खेल दिखलाने चले आए।" मैंने कुछ क्रोध से कहा। मनुष्य के सुख-दुःख का माप अपना ही साधन तो है। उसी के हिसाब से वह तुलना करता है।

उसने कहा - "क्यों न आता!"

और कुछ अधिक कहने में जैसे वह अपमान का अनुभव कर रहा था।

क्षण भर में मुझे अपनी भूल मालूम हो गई। उसके झोले को गाड़ी में फेंककर उसे भी बैठाते हुए मैंने कहा - "जल्दी चलो।" मोटरवाला मेरे बताए हुए पथ पर चल पड़ा।

कुछ ही मिनटों में मैं झोंपड़ी के पास पहुँचा। जादूगर दौड़कर झोंपड़े में "माँ-माँ" पुकारते हुए घुसा। मैं भी पीछे था; किंतु स्त्री के मुँह से वे ..... निकलकर रह गया। उसके दुर्बल हाथ उठकर गिर पड़े। जादूगर उससे लिपटा रो रहा था, मैं भौंचक्का खड़ा था। उस साफ धूप में सारा संसार जैसे जादू-सा मेरे चारों ओर नाच रहा था।

Unit 20.indd 77 23-06-2018 11:27:51

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

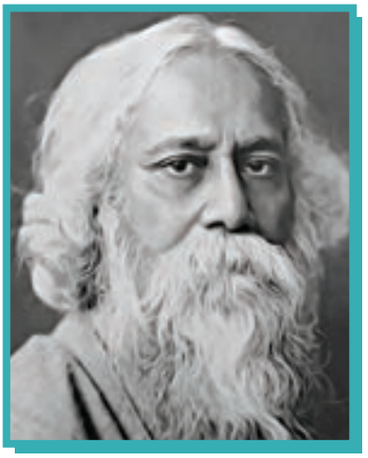
1. लड़का छोटा जादूगर क्यों बना?
2. लड़के को देखकर लेखक क्यों प्रभावित हुए?
3. छोटा जादूगर क्यों पैसा कमाना चाहता था?
4. बालक को उसकी आवश्यकता ने क्या बनाया?
5. बालक को किस बात पर गर्व था?
6. जरूरत किसको जन्म देती हैं?

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दो वाक्यों में लिखिये।

1. निशानेबाज खेल पर जीते चीज़ों को लड़के ने क्या किया?
2. छोटा जादूगर ने अपना परिचय कैसे दिया?
3. छोटे जादूगर की विशेषता क्या थी?
4. छोटे जादूगर कहानी से आपको क्या शिक्षा मिली?
5. "छोटे जादूगर" पाठ का सारांश लिखिये।

Unit 20.indd 78 23-06-2018 11:27:51

21 कहानी काबूलीवाला



मेरी पाँच बरस की छोटी बेटी मिनी बिना बोले पल-भर भी नहीं रह सकती। संसार में जन्म लेने के बाद भाषा सीखने में उसने केवल एक वर्ष का समय खर्च किया था। उसके बाद से जब तक वह जागती रहती है, एक पल भी मौन रहकर नष्ट नहीं करती। उसकी माँ बहुत बार डाँटकर उसका मुँह बंद कर देती है, किंतु मैं ऐसा नहीं कर पाता। चुपचाप बैठी मिनी देखने में इतनी अजीब लगती है कि मुझे बहुत देर तक सहन नहीं होता। इसलिए मेरे साथ उसकी बातचीत कुछ उत्साह के साथ चलती है।

सुबह मैंने अपने उपन्यास के सत्रहवें परिच्छेद में हाथ लगाया ही था कि मिनी ने आते ही बात छेड़ दी, "पिताजी, रामदयाल दरबार काक को कौआ कहता था। वह कुछ नहीं जानता । है न"?

संसार की भाषाओं की विभिन्नता के बारे में मेरे कुछ बताने से पहले ही वह दूसरे प्रसंग पर चली गई, "देखो पिताजी, भोला कह रहा था कि आकाश में हाथी सूँड से पानी डालता है, उसी से वर्षा होती है। मैया री! भोला कैसी बेकार की बातें करता रहता हे। खाली बक-बक करता रहता है, दिन-रात बकबक लगाये रहता है"।

इस बारे में मेरी हाँ-ना जरा भी इतंजार किया बिना वह अचानक पूछ बैठी, "पिताजी, माँ तुम्हारी कौन होती है?"

मन-ही-मन कहा, 'साली, ऊपर से कहा, "मिनी, जा तू भोला के साथ खेल। मुझे इस समय काम है।"

तब वह मेरे लिखने की मेज़ के किनारे मेरे पैरों के पास बैठकर अपने दोनों घुटनों पर हाथ रखकर बड़ी तेजी से 'अगड़म-बगड़म' कहते हुए खेलने लगी। मेरे सत्रहवें परिच्छेद में उस समय प्रतापसिंह कान्चनमाला को लेकर अँधेरी रात में कारागार के उच्च वातायन के नीचे बहती नदी के जल में कूद रहे थे।

मेरा कमरा सड़क के किनारे था। सहसा मिनी, अगड़म-बगड़म'का खेल छोड़कर जंगले की तरफ़ भागी और ज़ोर-ज़ोर से पुकारने लगी, "काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले।"

Unit 21.indd 79 23-06-2018 11:28:10

मैले-से ढीले-ढाले कपड़े पहने, सिर पर पगड़ी बाँधे, पीठ पर झोली लिये, हाथों में अँगूरों के दो-चार बक्स लिये एक लंब काबुलीवाला सड़क पर धीरे-धीरे जा रहा था। उसे देखकर मेरी कन्या-रत्न के मन में कैसी भाव उठे, कहना कठिन है। उसने उसको ऊँची आवाज़ में बुलाना शुरू कर दिया। मैंने सोचा, 'बस, अब पीठ पर झोली लिये एक आफ़त आ खड़ी होगी, मेरा सत्रहवें परिच्छेद अब पूरा नहीं हो सकता।

किंतु, मिनी की चीख पर ज्यों ही काबुलीवाले ने हँसकर मुँह फेरा और मेरे घर की ओर आने लगा, त्यों ही वह झपटकर अनन्तपुर में भाग गई, उसका नाम निशान भी न दिखाई पड़ा। उसके मन में एक तरह का अंधविश्वास था कि उस झोली के भीतर खोज करने पर उसके समान दो-चार जीवित मानव-संतान मिल सकती हैं।

इधर काबुलीवाला आकर मुस्कराता हुआ मुझे सलाम करके खड़ा हो गया। मैंने सोचा, 'हालाँकि प्रतापसिंह और कन्चनमाला की हालत बहुत कष्टपूर्ण है फिर भी, आदमी को घर पर बुला लेने के बाद उससे कुछ न खरीदना शोभा नहीं देता।"

कुछ खरीदा। उसके बाद दो-चार बातें हुईं। अब्दुर्रहमान, रूस, अंग्रेज़ आदि को लेकर सीमान्तप्रदेश की रक्षा-नीति के बारे में बातचीत होने लगी।

अंत में उठकर चलते समय उसने पूछा, "बाबू, तुम्हारी लड़की कहाँ गई"?

मैंने मिनी के भय को जड़ से खतम कर देने की नीयत से उसे भीतर से बुलवा लिया। वह मेरी देह से सटकर काबुली के चेहरे और झोली की तरफ़ संदिग्ध दृष्टि से देखती रही। काबुली उसे झोली से किशमिश, खुबानी निकालकर देने लगा, पर वह लेने की किसी तरह राजी नहीं हुई। दुगुने संदेह से मेरे घुटने से सटकर रह गई। पहला परिचय इस प्रकार पूरा हुआ।

कुछ दिन बाद, एक दिन सवेरे किसी काम से घर से बाहर जाते समय देखा – मेरी बेटी दरवाजे के पास बेंच के ऊपर बैठकर अनर्गल बातें कर रही है और काबुलीवाला उसके पैरों के पास बैठा मुस्कुराता हुआ सुन रहा है और बीच-बीच में प्रसंग के अनुसार अपना मंतव्य भी मिलीजुली बंगाली में व्यक्त कर रहा है। मिनी को अपने पंचवर्षीय जीवन की अभिज्ञता में पिता के अलावा ऐसा धैर्यवान श्रोता कभी नहीं मिला था। मैंने यह भी देखा कि उसका छोटा आँचल बादाम-किशमिश से भरा था। मैंने काबुलीवाले से कहा, "उसे यह सब क्यों दिया। अब फिर मत देना।" और मैंने जेब से एक अठन्नी निकालकर उसको दे दी। बिना संकोच के अठन्नी लेकर उसने झोली में रख ली।

घर लौटकर देखा, उसको अठन्नी को लेकर पूरा झगड़ा मचा हुआ है।

मिनी की माँ सफ़ेद चमचमाते हुई गोलाकार वस्तु को लेकर कड़े स्वर में मिनी से पूछ

Unit 21.indd 80 23-06-2018 11:28:10

रही थी, "तुझे यह अठन्नी कहाँ मिली"?

मिनी कह रही थी, "'काबुलीवाले ने दी है।"

उसकी माँ कह रही थी, "'काबुलीवाले से अठन्नी लेने तू क्यों गई?"

मिनी ने रोने की तैयारी करते हुए कहा, "'मैंने माँगी थोड़े ही थी, उसने स्वयं दी।"

मैंने आकर उस विपत्ति से मिनी को बचाया और उसे बाहर ले गया।

पता लगा, काबुलीवाले के साथ मिनी की यह दूसरी मुलाकात हो, ऐसा नहीं है। इस बीच में उसने प्रायः रोजाना ही आकर घूस पिस्ता-बादाम देकर मिनी के नन्हें क्षुब्ध हृदय पर बहुत-कुछ अधिकार कर लिया है।

मालूम हुआ, उन दो मित्रों में कुछ बँधी हुई बातें और परिहास प्रचलित हैं–जैसे रहमत देखते ही मेरी कन्या हँसते-हँसते पूछती, "काबुलीवाले! ओ काबुलीवाले! तुम्हारी झोली में क्या है।"

रहमत अनावश्यक चंद्रबिंदु जोड़कर हँसते हुए उत्तर देता, हाँ थीं।

अर्थात्, उसकी झोली में एक हाथी है। उसकी हँसी का यही गूढ़ रहस्य था। यह रहस्य बहुत ज्यादा गूढ़ था यह तो नहीं कहा जा सकता, किंतु इस परिहास से दोनों ही काफी विनोद का अनुभव करते रहते - और शरद काल के प्रभात में एक वयस्क और एक शिशु का सरल हास्य देखकर मुझे भी अच्छा लगता।

उनमें एक और बात भी प्रचलित थी। रहमत मिनी से कहता, 'मुन्नी, तुम क्या कभी ससुराल नहीं जाओंगी।"

बंगाली परिवार की लड़की जन्म-काल से ही "ससुराल" शब्द से परिचित रहती है, किंतु हमारे कुछ आधुनिक ढंग के लोग होने के कारण बालिका को ससुराल के संबंध में परिचित नहीं कराया गया था। इसीलिए वह रहमत के अनुरोध को ठीक से नहीं समझ पाती थी। फिर भी, प्रश्न का कुछ-न-कुछ उत्तर दिये बिना चुप रह जाना उसके स्वभाव के बिलकुल विपरीत था। वह उल्टकर पूछती, "तुम ससुराल जाओगे'?

रहमत काल्पनिक ससुर के प्रति खूब मोटा घूँसा तानकर कहता, "मैं ससुर को मारूँगा"।

सुनकर मिनी "ससुर" नामक किसी एक अपरिचित जीव की बुरी हालत की कल्पना करके खूब हँसती।

शुभ्र शरतकाल था।प्राचीन काल में राजे-महाराजे इसी ऋतु में दिग्विजय के लिए निकलते

Unit 21.indd 81 23-06-2018 11:28:10

थे। मैं कलकत्ता छोड़कर कभी कही नहीं गया, किंतु इसी से मेरा मन पृथ्वी-भर में चक्कर काट ता फिरता है। मैं मानों अपने घर के कोने में चिरप्रवासी होऊँ, बाहर के संसार के लिए मेरा मन सदा विकल रहता है। विदेश का कोई नाम सुनते ही मेरा मन दौड़ पड़ता है। उसी प्रकार विदेशी व्यक्ति को देखते ही नदी-पर्वत-जंगल के बीच कुटी का दृश्य मनमें उग आता है और एक उल्लासपूर्ण स्वाधीन जीवन-यात्रा की बात कल्पना में साकार हो उठती है।

दूसरी ओर मैं ऐसा भी हूँ कि अपना कोना छोड़कर बाहर निकलते ही सिर पर वज्रघात हो जाता है। इसलिए सुबह अपने छोटे कमरे में मेज़ के सामने बैठकर इस काबुली के साथ बातचीत करके घूमने-फिरने का मेरा काफी काम हो जाता। दोनों ओर मनोहारी ऊँचे-ऊँचे पहाड़,बीच में पतला-सा रास्ता, लाइन में चलते भार से लदे ऊँट। साफा बाँधे व्यापारिक, राहगिरों में से कोई ऊँट पर, कोई पैदल, किसी के हाथ में बल्लभ, किसी के हाथ में पुरानी चाल की चकमक-जड़ी बंदूक। काबुली धीमे स्वर में टूटी-फूटी बंगला में अपने देश की बातें कहता और मेरी आँखों के सामने उसकी तस्वीर आ जाती।

मिनी की माँ बड़े शंकालु स्वभाव की महिला थीं। रास्तें में कोई आवाज़ सुनते ही उन्हें लगता, दुनिया के सारे पियक्कड़ उन्हीं के घर को निशाना बनाकर दौड़े चले आ रहे हैं। यह पृथ्वी सर्वत्र चोर, डकैत, शराबी, साँप, बाघ, मलेरिया, तिलचट्टों और गोरों से परिपूर्ण है। इतने (बहुत अधिक नहीं) दिन धरती पर वास करने पर भी यह डर उनके मन से दूर नहीं हुआ था।

रहमत काबुलीवाले के बारे में वे पूरी तरह निर्भय नहीं थी।उस पर विशेष दष्टि रखने के लिए उन्होंने मुझसे बार-बार अनुरोध किया था। उनके संदेह को मेरे हँसकर उड़ा देने के प्रयत्न करने पर उन्होंने मुझसे एक-एक करके कई प्रश्न पूछे, "क्या कभी किसी के बच्चे चुराये नहीं जाते? काबुल देश में क्या दास-प्रथा प्रचलित नहीं है? क्या एक भीमकाय काबुली के लिए एक छोटे-से बच्चे को चुरा ले जाना नितान्त असंभव है?"

मुझे मानना पड़ा, बात असंभव हो, ऐसा तो नहीं, किंतु अविश्सनीय है। पर विश्वास करने की ताक़त सबमें बराबर नहीं होती, इसीलिए मेरी पत्नी के मन में डर बना रहा। किंतु, मैं इस कारण निर्दोष रहमत को अपने घर आने से मना न कर सका।

हर साल माघ के महीने के बीचों बीच रहमत अपने देश चला जाता। उस समय वह अपना सारा उधार रुपया वसूल करने में बड़ा व्यस्त रहता। दूर-दूर घूमना पड़ता पर फिर भी वह मिनी को एक बार दर्शन दे जाता। देखने पर सचमुच ऐसा लगता मानों दोनों में कोई षड्यंत्र चल रहा हो। जिस दिन वह सबेरे न आ पाता, उस दिन देखता कि वह शाम को आ पहुँचा है। अँधेरे में कमरे के कोने में ढीला-ढाला कुरता-पायजामा पहने, झोला-झोली वाले उस लंबे आदमी को देखने पर मन में सचमुच ही अचानक एक आशंका उठने लगती। किंतु, जब देखता कि मिनी

Unit 21.indd 82 23-06-2018 11:28:10

'काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले कहती हँसती हुई दौड़ी चली आती एवं उन दो असमान उम्रवाले मित्रों में पुराना सरल परिहास चलता रहता, तो हृदय प्रसन्नता से भर उठता।

एक दिन सबेरे, मैं अपने कमरे में बैठा प्रूफसंशोधन कर रहा था। विदा होने के पहले आज दो-तीन दिन से जाड़ा खूब कँपकँपा रहा था। चारों ओर एकाएक सीत्कार मच गई थी। जंगले को पार करके टेबिल के नीचे आकर मेरे पैरों पर पड़ रही सुबह की धूप की गरमाहट बड़ी मीठी लग रही थी। आठ बजे का समय रहा होगा। सिर पर गुलूबंद लपेटे तड़के टहलने वाले प्रायः सभी सवेरे की सैर पूरी करके घर लौट रहे थे। तभी सड़क पर बड़े जोर से हल्ला सुनाई पड़ा। आँख उठाई तो देखा दो पहरेदार अपने रहमत को बाँधे लिये जा रहे हैं। उसके पीछे तमाशबीन लड़कों की टोली चली आ रही है। रहमत के शरीर तथा कपड़ों पर खून के दाग हैं और एक पहरेदार के हाथ में खून से सना छुरा है। मैंने दरवाजे के बाहर आकर पहरेदारों को रोक्कर पूछा, "मामला क्या है"?

कुछ उनसे, कुछ रहमत से सुनकर मालूम हुआ कि हमारे एक पड़ोसी ने रामपुरी चादर के लिए रहमत से कुछ रुपया उधार लिया था। उसने झूठ बोल कर रुपया देने से इनकार कर दिया, और इसी बात को लेकर कहा - सुनी करते-करते रहमत ने उसके छूरा भोंक दिया।

रहमत उस झूठे की ओर मूँह करके तरह-तरह की भद्दी गालियाँ दे रहा था। तभी "काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले" पुकारती हुई मिनी घर से निकल आई।

पलक मारते रहमत का चेहरा कौतुकपूर्ण हँसी से चमक उठा। उसके कंधे पर आज झोली नहीं थी, इसलिए झोली के संबंध में उनकी नियमित चर्चा नहीं चल सकी। मिनी ने छूटते ही उससे पूछा,"तुम ससुराल जाओगे?"

रहमत ने हँसकर कहा, 'वहीं जा रहा हूँ।'

देखा, उत्तर मिनी को विनोदपूर्ण नहीं लगा, तब वह अपने हाथ दिखाकर बोला, "ससुर को मारता पर क्या करूँ–हाथ बँधे हैं।"

जानलेवा हमला करने के अपराध में रहमत को कई वर्ष की जेल हो गई।

उसकी बात करीब-करीब भूल गया। हम जिस समय घर में बैठकर सदा के समान नित्य नियमित काम एक के बाद एक दिन काट रहे थे, उस समय पर्वतों में आज़ादा घूमनेवाला एक पुरुष जेल की चारदीवारी में किस तरह वर्ष बिता रहा था, यह बात हमारे मन में उठी भी नहीं।

और चुलबुली मिनी का आचरण तो बहुत-ही लज्जाजनक था, यह उसके पिता को भी मानना पड़ेगा। उसने बड़ी आसानी से अपने पुराने मित्र को भुलाकर पहले तो नबी सईस के साथ दोस्ती गाँठी। बाद में धीरे-धीरे जैसे-जैसे उसकी उम्र बढ़ने लगी वैसे-वैसे सखा के बदले

Unit 21.indd 83 23-06-2018 11:28:10

एक-एक करके सखियाँ जुटने लगीं। यहीं नहीं, अब वह अपने पिता के लिखने-पढ़ने के कमरे में भी नहीं दिखाई पड़ती थी। मैंने तो उसके साथ एक तरह से कुट्टी ही कर ली थी।

न जाने कितने वर्ष बीत गए। और एक शरद्काल आया। मेरी मिनी का विवाह संबंध तय हो गया। पूजा की छुट्टियों में उसका विवाह होगा, कैलाशवासिन के साथ-साथ मेरे घर की आनन्दमयी भी पिता के घर में अँधेरा करके पति के घर चली जायगी।

अत्यंत सुहावनी सुबह थीं। वर्षा के बाद शरद की नई धूप ने जैसे सुहागे में गलाये हुए निर्मल सोने का-सा रंग धार लिया हो। यही नहीं, कल्कत्ता की गलियों के भीतर के घुटनदार जर्जर ईंटों वालें सटे हुए मकानों पर भी इस धूप की आभा ने एक अपूर्व लावण्य बिखेर दिया था।

आज मेरे घर में रात बीतते-न-बीतते ही शहनाई बज उठी थी। वह बाँसुरी मानों मेरे हृदय के अस्थि-पंजर में से क्रंदन करती बज रही हो। करुण भैरवी रागिनी मेरे आनेवाले कष्ट को शरद् की धूप के साथ सारे संसार में फैला रही थी। आज मेरी मिनी का विवाह था।

सवेरे से ही बड़ी भीड़-भाड़ थी, लोग आ-जा रहे थे। आँगन में बाँस बाँधकर मण्डप ताना जा रहा था। घर के कमरों और बरामदों में झाड़ टाँगने की ठक्-ठक् आवाज़ हो रही थी। गजल का शोर-गुल था।

मैं लिखने के अपने कमरे में बैठा हिसाब देख रहा था, तभी रहमत आकर सलाम करके खड़ा हो गया।

पहले तो मैं उसे पहचान ही न सका। न तो उसके पास वह झोली थी, न उसके वे लंबे बाल थे और न उसकी देह में पहले-जैसा तेज़ था। आखिर उसकी हँसी देखकर उसे पहचाना।

मैंने कहा, 'क्यों रे रहमत, कब आया?'

उसने कहा, 'कल शाम को जेल से छूटा हूँ।'

बात सुनकर कानों में जैसे खटका हुआ। कभी किसी खूनी को प्रत्यक्ष नहीं देखा, इसे देखकर सारा अंतकरण जैसं संकुचित हो गया। मन हुआ, आज के इस शुभ दिन पर यह आदमी यहाँ से चला जाता तो अच्छा होता।

मैंने उससे कहा, 'आज हमारे घर में एक काम है, मैं कुछ व्यस्त हूँ, आज तुम जाओ।"

बात सुनते ही वह उसी क्षण चले जाने लगा, अंत में दरवाजे के पास पहुँचकर थोड़ा इधर-उधर करके बोला, "क्या एक बार मुन्नी को नहीं देख सकूँगा?"

Unit 21.indd 84 23-06-2018 11:28:10

कदाचित उसे विश्वास था, मिनी अब भी वैसी ही होगी। मानों उसने सोचा हो, मिनी अब भी पहले की ही भाँति 'काबुलीवाले, ओ काबुलीवाले' कहती दौड़ी आयेगी। उनकी उस अत्यंत उत्सुकु तापूर्ण पुरानी हँसी-विनोद की बातों में किसी प्रकार का अंतर नहीं होगा। यही नहीं, पुरानी मित्रता का स्मरण करके वह शायद अपने देशवाले किसी दोस्त से माँग-जाँचकर एक डिब्बा अंगूर और कागज़ के ठोंगे में थोड़े-से किशमिश-बादाम जुटा लाया था। उसकी वह अपनी झोली अब नहीं थी।

मैंने कहा, "आज घर में काम है, आज और किसी से भेंट न हो सकेगी।"

वह मानों कुछ दुखी हुआ। चुपचाप खड़े-खड़े एक बार स्थिर दृष्टि से उसने मेरे मुख की ओर देखा, फिर 'सलाम बाबू' कहकर दरवाजे के बाहर चला गया। मुझे अपने मन में न जाने कैसी एक व्यथा का अनुभव हुआ। सोच रहा था कि उसको वापस बुलवा लूँ, तभी देखा कि वह स्वंय लौटा चला आ रहा है।

पास आकर बोला, 'ये अंगूर और थोड़े से किशमिश बादाम मुन्नी के लिए लाया था, दे दीजिएगा।"

उन्हें लेकर दाम देने के लिए मेरे तैयार होते ही उसने तुरंत मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया। बोला, 'आपकी बड़ी कृपा है, मुझे सदा याद रहेगी। मुझे पैसा मत दीजिए। बाबू, जिस तरह तुम्हारे एक लड़की है, उसी तरह देश में मेरे भी एक लड़की है। मैं उसी का चेहरा याद करके तुम्हारी मुन्नी के लिए थोड़ी बहुत मेवा लेकर आया हूँ, सौदा करने नहीं।"

यह कहते हुए उसने अपने ढीले-ढाले कुरते में हाथ डालकर कही छाती के पास से मैले कागज का एक टुकड़ा निकाला और बड़े यत्न से उसकी तह खोलकर दोनों हाथों से मेरी टेबिल पर बिछा दिया।

देखा, कागज पर किसी नन्हें हाथ की छाप थी। फोटोग्राफ नहीं, तैलचित्र नहीं, हाथ में थोड़ी-सी कालिख लगाकर कागज़ के ऊपर उसकी छाप ले ली गई थी। कन्या के इस स्मरण चिह्न को छाती से लगाए रहमत हर साल कलकत्ता की सड़कों पर मेवा बेचने आता, मानो नन्हें बच्चे के उस सुकोमल हाथ का स्पर्शमात्र उसके विरही हृदय में अमृत का संचार करता रहता हो।

देखकर मेरी आँखें छलछला आईं। वह एक काबुली मेवावाला है और मैं एक संभ्रांतवंशीय बंगाली, उस समय मैं भूल गया। उस समय मैंने समझा कि जो वह है, वही मैं हूँ। वह भी पिता है, मैं भी पिता हूँ। उसकी पर्वत-गृहवासिनी नन्हीं पावती की उस हस्तछाप ने मुझे भी अपनी मिनी की याद दिला दी। मैंने उसी क्षण उसे भीतर से बुलवाया। अन्तःपुर में इस बात पर बहुत-

Unit 21.indd 85 23-06-2018 11:28:10

सी आपत्तियाँ की गईं। किंतु मैंने उन पर कोई ध्यान न दिया। लाल चेली पहने, माथे पर चंदन लगाए, वधू के वेष में मिनी लज्जा से भरी मेरे पास आकर खड़ी हो गई।

उसको देखकर पहले तो काबुलीवाला सकपका गया, अपना पुराना वार्तालाप नहीं जमा पाया। अंत में हँसकर बोला, "मुन्नी, तू ससुराल जायेगी?"

मिनी अब ससुराल का अर्थ समझती थी, इस समय वह पहले के समान उत्तर नहीं दे सकी। रहमत का प्रश्न सुनकर लज्जा से लाल होकर मुँह फेरकर खड़ी हो गई। जिस दिन काबुलीवाले से मिनी की पहले भेंट हुई थी, मुझे उस दिन की बात याद हो आई। मन न जाने कैसा व्यथित हो उठा।

मिनी के चले जाने पर गहरी साँस लेकर रहमत ज़मीन पर बैठ गया। अचानक उसकी समझ में साफ़ आ गया, इस बीच उसकी पुत्री भी इसी तरह बड़ी हो गई होगी। उसके साथ भी नया परिचय करना होगा। वह उसे बिलकुल पहले जैसी नहीं मिलेगी। इन आठ वर्षों में उस पर क्या बीती होगी, यह भी भला कौन जानता है। सवेरे के समय शरद -कालीन प्यारी सूर्य की किरणों में शहनाई बजने लगी। रहमत कलकत्ता की किसी गली में बैठकर अफगानिस्तान के किसी मरुपर्वत का दृश्य देखने लगा।

मैंने एक नोट निकालकर उसे दिया। कहा, 'रहमत, तुम अपनी लड़की के पास अपने देश लौट जाओ। तुम्हारा मिलन-सुख मेरी मिनी का कल्याण करे।"

इन रुपयों का दान करने के कारण हिसाब में से उत्सव-समारोह के दो-एक अंग छाँट देने पड़े। जैसी सोची थी, बिजली की वैसी रोशनी नहीं की जा सकी। फौजी बैंड भी न आ सका।अन्तःपुर में स्त्रियाँ बड़ी नाराजगी जताने लगीं, लेकिन मंगल-आलोक में मेरा शुभ-उत्सव प्रकाशमान हो उठा।

I निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पूरे वाक्यों में लिखिये।

1. काबुलीवाला किसकी रचना है?
2. काबुलीवाला की क्या विशेषता थी?
3. मिनी कैसी लड़की थी?
4. मिनी ने काबुलीवाले से क्या पूछा?
5. काबुलीवाला का नाम क्या है?

Unit 21.indd 86 23-06-2018 11:28:10

II निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर तीन वाक्यों में लिखिये।

1. मिनी का व्यवहार कैसा था?
2. भोला ने मिनी से क्या कहा?
3. मिनी किसे पुकार रही थी?
4. प्राचीन काल में राजा महाराजा प्रातकाल किसकेलिए निकलते थे?
5. लेखक के किस बात की कल्पना साकार होती है?
6. मिनी की माँ का स्वभाव कैसा था?
7. मिनी की माँ के नजर में पृथ्वी किन-किन लोगों से भरी हुई थी?

III निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर पाँच वाक्यों में लिखिये।

1. काबुलीवाला ने लेखक से किस नीति के बारे में बातचीत की?
2. काबुलीवाला ने अपना परिचय कौन सी भाषा में दीं?

Unit 21.indd 87 23-06-2018 11:28:10

22 निबंध राष्ट्रीय त्योहार

भारत एक है। विभिन्नता में एकता इसकी विशेषता है। सर्व धर्म प्रार्थना भारत की पहचान है। त्योहार खुशियों का क्षण है। त्योहार परम्परागत पारिवारिक आपसी मेंल मिलाप का दृढ़ संबंध है। त्योहारों का आधार वसुदैव कुडुंबम् है। एक जनवरी से लेकर इकतीस दिसम्बर तक विभिन्न संदर्भों में कई प्रकार के भावात्मक और रागात्मक त्योहार मनाये जाते हैं।

राज्य त्योहार

कुछ त्योहार जयन्तियों के नाम से रामनवमी, जन्माष्ठिमी, गाँधी जयंती, नववर्ष, क्रिस्मस आदि के रूप में मनाई जाती है। होली-रंगोली, दीपों की आवली दीपावली, कृषकों का पर्व पोंगल, मज़दूरों का पर्व मई दिवस। भाईचारे का दिवस रंक्षा बंधन और रमजान आदि है।

स्कूली त्योहार स्थापना दिवस, भाषा दिवस, खेल दिवस, वार्षिकोत्सव, बाल दिवस, शिक्षक दिवस आदि स्कूलों में आयोजित विभिन्न साम्प्रदायिक पारिवारिक राष्ट्रीय त्योहार छात्र-छात्राओं के मानसिक आध्यात्मिक शारिरक, चारित्रिक विकास का कारण बनता है।

राष्ट्रीय त्योहार

वन्देमातरम्, तमिल ताई वाळतु के साथ शुरूकर, तिरंगे झण्ड़े का सलामी राष्ट्रगीत के साथ संपन्न त्योहार राष्ट्रीय त्योहार है। महान नेताओं के समर्पण, त्याग और बलिदान पर श्रद्धा सुमन अर्पित कर अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की साम्प्रदायिकता ही राष्ट्रीय त्योहार है। हृदयों का प्रेम मिलाप हार्दिक परिवर्तन आत्मतृप्ति और आत्म संतोष का प्रकटीकरण हमारा त्योहार मनाने का लक्ष्य रहा है। आपसी द्वेष को दूर कर भाई चारे को बढ़ाने का संदेश हमारे त्योहार सिखाते हैं।

Unit 22.indd 88 23-06-2018 11:28:30

23 निबंध विज्ञापन का महत्व

विज्ञापन आधुनिक युग की देन है। विज्ञापन एक कला और साधन है। विज्ञापन का विभिन्न रूप व शैली कलात्मक है। लोगों के आकर्षण का केंद्र विज्ञापन है। विज्ञापन के द्वारा हमें जानकारी मिलती है।

संचार-माध्यम का मुख्य अंग विज्ञापन बन गया है। व्यापार बढ़ाने का तौर-तारिका विज्ञापन है। विज्ञापन का आकर्षित रंगीत चित्र व शुद्धावली लोगों की आवश्यकताओं का पूर्ति करता है।

विज्ञापनों का प्रभाव सर्वव्यापी है। मानव चीज़ों की उपलब्धी का विवरण विज्ञापनों द्वारा प्राप्त कर अपनी आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। विज्ञापन हरेक की मांग की पूर्ती करने का श्रेष्ठ साधन बन गया है।

विज्ञापन के आकर्षण से लोग कभी-कभी धोखें में पड़ते है। विज्ञापन का महत्व समझकर व्यापारियों को जीवन में आगे बढ़ना चाहिए। विज्ञापन संस्थायें विज्ञापन का उद्देश्य पूर्ति करने में सहायक है। विज्ञापनकर्ता को अपनी जिम्मेदारी को महसूस कर विज्ञापन देना चाहिए। अश्लील व झूठे विज्ञापन से दूर रहना चाहिए। विज्ञापन बहुतो की जीविका बन गई है। हरेकके कमियाँ दूर करने में सार्थक सिद्ध हुई है।

विज्ञापन का महत्व बेचनेवाला, एवं उपभोगकर्ता दोनों को समझकर आगे बढ़ने में है। आजकल दूर संचार, दूरदर्शन, रेडियो, समाचार पत्र आदि विज्ञापन के साधन बन गये हैं।

Unit 23.indd 89 23-06-2018 11:28:51

24 व्याकरण वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह मालूम हो कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है, कर्म है, अथवा भाव है, उसे वाच्य कहते हैं। जैसेः- मैं पत्र लिखता हूँ। (यहाँ क्रिया कर्ता के अनुसार है।)

पत्र मेरे द्वारा लिखा जाता है। यहाँ किया कर्म के अनुसार है। मेरे द्वारा हँसा नहीं जाता। यहाँ कर्म हँसने के कारण क्रिया भाव के अनुसार है।

वाच्य तीन प्रकार के होते हैं :- 1. कर्तृवाच्य 2. कर्मवाच्य 3. भाववाच्य

1. कर्तृवाच्य :- क्रिया के इस रूप से यह जाना जाता है कि उसका मुख्य विषय कर्ता है। इसमें क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष कर्ता के अनुकूल होते हैं। जैसेः- राजा खाना खाता है। लड़कियाँ पुस्तकें पढ़ेंगी।

पहले वाक्य में 'खाना' क्रिया कर्ता राजा के अनुकूल अन्यपुरुष पुल्लिंग और एकवचन है। दूसरे वाक्य में 'पढेंगी' क्रिया कर्ता 'लड़कियाँ' के अनुसार अन्य पुरुष, स्त्रीलिंग और बहुवचन है। ये दोनों कर्तृवाच्य हैं।

2. कर्मवाच्य :- क्रिया के इस रूप से यह जाना जाता है कि उसका मुख्य विषय कर्म है। क्रिया के जिस रूप में पुरुष, लिंग और वचन कर्म के अनुसार हों, उसे कर्मणि प्रयोग कहते हैं। दूसरे शब्दों में वाक्य का उद्देश्य कर्ता न होकर कर्म होता है। यहाँ वाक्य में कर्म ही प्रधान होता है। जैसेः-

सीता ने रोटी खायी है। राम से चिट्ठी भेजी गयी। यहाँ रोटी, चिट्ठी प्रधान हैं । वाक्य की क्रियाएँ 'खायी' 'भेजी गयी' इन्हींके अनुसार हैं।

कर्मवाच्य क्रिया में ये बातें अवश्य होती हैं।

1. क्रिया में एक से अधिक क्रियापद होते हैं।
2. 'जाना' क्रिया का सहायक क्रिया के रूप में प्रयोग किया जाता है।

Unit 24.indd 90 23-06-2018 11:29:10

3. वाच्य का उद्‌देश्य कर्म होता है।

4. मुख्य क्रिया सकर्मक होती है।

5. क्रिया के लिंग, वचन कर्म के अनुसार होते हैं।

विशेषः- सकर्मक क्रियाएँ भूतकाल में (कर्म की उपस्थिति में) कर्मवाच्य होंगी। कर्तृवाच्य कभी नहीं। जैसेः- कृष्ण ने मक्खन खाया, राधा ने आम खाया। (अपवादः राम कलम लाया।)

3. भाववाच्य :- क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाए कि वाक्य की क्रिया के विधान का मुख्य विषय कर्ता या कर्म न होकर भाव (धात्वर्थ) है, उसे भाववाच्य कहते हैं। अर्थात्, वाक्य का उद्‌देश्य क्रिया का कर्ता या कर्म न होकर केवल भाव अर्थात् क्रिया (धात्वर्थ) होता है। इस प्रकार क्रिया का मुख्य संबंध भाव से ही होता है। दूसरे शब्दों में भाव पर बल दिया जाता है। जैसेः-

मोहन से बैठा नहीं जाता। यहाँ केवल 'बैठा' क्रिया पर ही बल है, अतः यहाँ भाववाच्य है। सीता से वन में चला नहीं गया। लड़कियों से अधिक नहीं बोला जाता।

भाववाच्य की क्रिया प्रायः अशक्तता प्रकट करने के लिए ही प्रयुक्त होती है।

भाववाच्य में ये बातें पायी जाती हैं :-

1. वाच्य में एक से अधिक क्रिया पद होते हैं।
2. सहायक क्रिया के रूप में 'जाना' के क्रिया रूप का प्रयोग होता है।
3. मुख्य क्रिया अकर्मक होती है। अतः भाववाच्य में धात्वर्थ (भाव) को ही कर्म बना दिया जाता है।
4. क्रिया हमेशा पुल्लिंग, एकवचन तथा अन्य पुरुष में रहती है।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य तथा भाववाच्य बनाने की रीति

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के लिए :- कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रियाओं से ही बनते है। अतः कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय निम्नलिखित परिवर्तन करने होते हैः-

1. कर्तृवाच्य के मुख्य कर्ता के साथ 'से' (कभी-कभी द्वारा) विभक्ति जोड़कर उसे करण कारक बना दिया जाता है। जैसेः- राम-राम से, सीता ने- सीता से, मैंने -मेरे द्वारा, मुझसे।

Unit 24.indd 91 23-06-2018 11:29:10

2. कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया बना दिया जाता है। जैसेः- खा-खाया, खायी, खाये, पढ़-पढ़ा, पढ़े, पढ़ी।

3. जो धातु के क्रिया रूप कर्मवाच्य की (सामान्य भूतकाल) मुख्य क्रिया के लिंग, वचन, आदि के अनुसार जोड़कर साधारण क्रिया को संयुक्त क्रिया बना दिया जाता है। जैसेः- खाता है- खाया जाता है, पढ़ेगी-पढ़ी जाएगी।

4. कर्मवाच्य की क्रिया के लिंग, वचन आदि वाक्य के कर्म के अनुसार कर दिये जाते हैं।

सकर्मक कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
सीता खाना बनाती है।	सीता से खाना बनाया जाता है।
राम गीत सुनाएगा।	राम से गीत सुनाया जाएगा।

कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाने की विधियाँ

भाववाच्य केवल अकर्मक क्रियाओं से ही बनते हैं। अर्थात् उनमें कर्म नहीं होता, अतः कर्तृवाच्य से भाववाच्य बनाते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिएः-

(क) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने की विधि के नियम 'क' तथा 'ख' यहाँ भी पूरी तरह लागू होते हैं।

(ख) वाक्य की क्रिया (भाव) को ही वाक्य का कर्ता बना दिया जाता है। जैसे :- हँसता है- हँसा जाता है, खेला-खेला गया।

(ग) 'जा' धातु के क्रिया-रूप कर्तृवाच्य के काल-भेद के अनुसार जुड़ जाते हैं।

(घ) क्रिया सदैव अन्यपुरुष, पुल्लिंग तथा एकवचन में रहती है।

कमला दौड़ नहीं सकती - कमला से दौड़ा नहीं जाता।

बच्चे छत से कूद नहीं सकते - बच्चों से छत से कूदा नहीं जाता।

निम्नलिखित प्रश्नों को उत्तर दीजिएः-

1. वाच्य किसे कहते हैं?

2. वाच्य कितने प्रकार के होते हैं? उसका विवरण लिखिए।

Unit 24.indd 92 23-06-2018 11:29:10

अनुवाद अभ्यास

Translate the following into Hindi
1. He comes to my house every day.
2. They play in the gardens in the evenings.
3. She goes to school in a school van.
4. Why do you come late to school.
5. He does not live here any longer.
6. My father works in that place.
7. We swim in the river during the holidays.
8. I know that he is ill.
9. This oldman is going to the railway station.
10. Our master is teaching us Hindi.
11. I am writing a letter to my brother.
12. They are fishing in the lake.
13. The people are sitting under the trees.
14. You will understand this after a few days
15. I shall not speak to you again.
16. He will teach us in the morning.
17. We shall not wait for you.
18. My friends came to my house for a party.
19. They were sitting near the post office.
20. They have gone to cinema.
21. We have not been here before.
22. The ink has dried.
23. Her friends have come from Delhi.
24. I was reading a very good book.
25. The train was very late last evening.

Unit 25.indd 93 23-06-2018 11:29:37

अनुवाद अभ्यास

Translate the following into English
1. लड़के अपनी किताबें पढ़ रहे हैं।
2. पंडितजी हम से काम ले रहे हैं।
3. मैं सुबह छः बजे घूमने जाता हूँ।
4. किसान अपने खेत में काम करता है।
5. पानी बरसने से तालाब और कुएँ भर जाते हैं।
6. बकरियाँ खेत में घास चरती हैं।
7. मेरे बाग में बहुत सुंदर फूल थे।
8. अन्नदान सबसे श्रेष्ठ है। अन्नदान सबसे श्रेष्ठ है।
9. सादा जीवन उच्च विचार।
10. जीओ और जीने दो।
11. परिवर्तन ही उन्नति का लक्षण है।
12. बहता पानी निर्मल है।
13. चलती का नाम गाड़ी है।
14. चलना मनुष्य का धर्म है।
15. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिषक रहता है।
16. मैंने आज तरकारियाँ खरीदी।
17. हमें समयानुसार चलना चाहिए।
18. उस लड़के ने जमीन की सफाई की।
19. प्रसाद का नाटक स्कन्दगुप्त है।
20. राम ने पौधों के लिए जल सींचा।
21. मेरे दादाजी ने आज़ादी की लड़ाई में भाग लिया था।
22. हमें आपस में मिलकर रहना चाहिए।
23. परिश्रम का फल मीठा होता है।
24. यह बिलकुल ठीक है।
25. मामला विचाराधीन है।

Unit 25.indd 94 23-06-2018 11:29:37

वाक्य शुद्धि

1. मेज़ में पुस्तक पड़ी है।
2. राम के बहिन का नाम सीता है।
3. मैं स्कूल जाना चाहिए।
4. वह आपका घर चल आ सकेगा।
5. तालाब के अंदर छोटी-सी मंदिर है।
6. वह आपका घर कल आ सकेगा।
7. रोहन ने रोटी खाया।
8. गुणशीला चलती-चलती थक गए।
9. राज गाना गाया।
10. राम ने अपने मित्र को एक-सौ रुपया पूछा।

कारक

कोष्ठक में दिए गए कारक चिन्हों से रिक्त स्थान भरिए।

(ने, को, से, का, की, के, में, पर, के लिए, के द्वारा)

1. राजू कलम ———— लिखता है।
2. पेड़ ———— पत्ता गिरा।
3. सीता ———— पुस्तक पढ़ी।
4. अध्यापक विद्यार्थियों ———— पढ़ाते हैं।
5. उसकी बहन ———— नाम मालती है।
6. लता चाकू ———— फल काट रही है।
7. रमा ———— पुस्तक मेरे पास है।
8. अलमारी ———— कपड़े रखे है।
9. मेज़ ———— पंखा रखा है।
10. युवक ———— कपड़े फट गए।

Unit 25.indd 95 23-06-2018 11:29:37

11. वह घर ———————— नहीं है।

12. उसने भिखारी ———————— भीख दी।

13. बिल्ली ———————— चूहे को मारा।

14. किसान खेत ———————— काम करते हैं।

मुहावरों का भाव जोड़िये

अ.	1.	खाक में मिलाना	**क.**	पिछली बातों को व्यर्थ में याद करना
	2.	गड़े मुर्दे उखाडना	**ख.**	धोखा देना
	3.	टाँग अडाना	**ग.**	नष्ट-भ्रष्ट कर देना
	4.	चकमा देना	**घ**	व्यर्थ में दखल देना

आ.	1.	जी चुराना	**क.**	निर्दोष लगाना
	2.	चाँद पर थूकना	**ख.**	इज्जत बढ़ाने वाला
	3.	घर का उजाला	**ग.**	हार कर भागना
	4.	पीठ दिखाना	**घ**	मेहनत से बचना

इ.	1.	आसमान सिर पर उठाना	**क.**	असहनीय दुख होना
	2.	कलेजा फटना	**ख.**	बहुत प्यारा
	3.	गले का हार	**ग.**	बरत बिगड़ जाना
	4.	गुड गोबर करना	**घ**	बहुत शोर करना

ई.	1.	गर्दन उठाना	**क.**	बहुत परिश्रम करना

Unit 25.indd 96 23-06-2018 11:29:37

2.	खून पसीना एक करना	**ख.**	क्रोध से भर जाना
3.	कमर कसना	**ग.**	विरोध करना
4.	आग बबूला होना	**घ**	तैयार होना

उ. 1.	नाम कमाना	**क.**	भेद खुलना
2.	मुँह फेरना	**ख.**	सम्मान प्राप्त करना
3.	नौ-दो ग्यारह होना	**ग.**	उपेक्षा करना
4.	पेल खुलना	**घ**	भाग जाना
ऊ. 1.	पलकें बिछाना	**क.**	जोर की भूख लगना
2.	पेट में चूहे कूदना	**ख.**	डर कर भाग जाना
3.	दाल न गलना	**ग.**	प्रेमपूर्वक स्वागत करना
4.	दुम दबाकर भागना	**घ**	सफल न होना

निर्देशानुसार परिवर्तन कीजिए।

1. उसने फल खाया। **(वर्तमानकाल में बदलिए)**
2. कल मेहमान आयेंगे। **(भूतकाल में बदलिए)**
3. बालक खा रहा था। **(भविष्यतकाल में बदलिए)**
4. माताजी मंदिर जाएँगी। **(अपूर्ण वर्तमानकाल में बदलिए)**
5. शिकारी शिकार करेगा। **(अपूर्ण भूतकाल में बदलिए)**
6. नेताजी भाषण देंगे। **(संदिग्ध वर्तमानकाल में बदलिए)**
7. पिताजी मैसूर जा रहे हैं। **(भूतकाल में बदलिए)**
8. सीता गाना गाती है। **(भविष्यतकाल में बदलिए)**

Unit 25.indd 97 23-06-2018 11:29:37

9. उसने दरवाजा खोला। **(भविष्यतकाल में बदलिए)**

10. लड़के मैदान में खेल रहे थे। **(भविष्यतकाल में बदलिए)**

लिंग बदलिए

1. दास _____ 2. पुत्र _____

3. बेटा _____ 4. पिता _____

5. वर _____ 6. लेखक _____

7. सुनार _____ 8. मोर _____

9. धोबी _____ 10. नौकर _____

निमनलिखित स्त्रीलिंग शब्दों का पुल्लिंग रूप लिखिए:

1. भैंस _____ 2. विदुषी _____

3. गायिका _____ 4. बालिका _____

5. बेगम _____ 6. सम्राज्ञि _____

7. शिष्या _____ 8. चौधरानी _____

9. देवरानी _____ 10. चुहिया _____

वचन बदलिए

अन्य वचन रूप लिखिए:-

1. माता _____ 2. ऋतु _____

3. राशि _____ 4. आँख _____

5. गाय _____ 6. भैंस _____

Unit 25.indd 98 23-06-2018 11:29:37

7. नीति _____ 8. नदी _____

9. भेडिया _____ 10. बुढ़िया _____

पर्यायवाची शब्द/समानार्थ शब्द

1. अश्व _____ _____ _____ _____
2. अंधकार _____ _____ _____ _____
3. आकाश _____ _____ _____ _____
4. कमल _____ _____ _____ _____
5. जल _____ _____ _____ _____
6. पवन _____ _____ _____ _____
7. नारी _____ _____ _____ _____
8. चाँद _____ _____ _____ _____
9. घर _____ _____ _____ _____
10. ईश्वर _____ _____ _____ _____

विलोम शब्द

विलोम शब्द लिखिए:-

1. अंदर _____ 2. अंधकार _____
3. अपना _____ 4. आदर _____
5. आशा _____ 6. आज़ादी _____
7. आरंभ _____ 8. ईश्वर _____
9. उचित _____ 10 उत्तीर्ण _____

Unit 25.indd 99 23-06-2018 11:29:37

निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर उत्तर लिखिए:

ईश्वर ने संसार के सारे रहस्य प्रकृति में छिप कर रख दिये थे। मनुष्य ने अपने परिश्रम और प्रयत्न से उन रहस्यों पर से पर्दा उठा दिया। यह कहना गलत है कि मनुष्य संसार में आते समय, अपना भाग्य लेकर आता है। वास्तव में वह अपने भाग्य का स्वयं निर्माता है जो वह अपनी मेहनत से बनाता है। प्रकृति मनुष्य के भाग्य से डर कर नहीं बल्कि उसके परिश्रम से हार मानती है। जो लोग भाग्य पर विश्वास करते हैं वे आलसी है वास्तव में वीर और परिश्रमी व्यक्ति अपना भाग्य स्वंय बनाता है।

प्रश्न:-

1. ईश्वर ने संसार के सारे रहस्य किसमें छिपाकर रख दिये थे?

2. किसने अपने परिश्रम और प्रयत्न से रहस्यों पर से पर्दा उठा दिया?

3. प्रकृति किससे हार मानती है?

Unit 25.indd 100 23-06-2018 11:29:37

Hindi – Std IX

List of Authors and Reviewers

Chairperson

Dr. M. Seshan,
Professor (Retd.,)
Head of the Department. (Hindi)
D.G. Vaishnav College, Arumbakkam, Chennai.

Reviewer

Dr. Kokila P.C.,
Associate Professor (Retd.),
Head of the Department. (Hindi)
Presidency College, Chennai.

Authors

S. Anandakrishnan, M.A., M.Ed.,
Headmaster (Retd.)
The Hindu Hr. Sec. School, Triplicane, Chennai.

S. Satyanarayanan, M.A., M.Ed.,
PG Asst. in Hindi (Retd.)
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

M. Gabriel Govindaraju, M.A., B.Sc., B.Ed.,
Lecturer in Hindi (Retd.)
Navalar Nedunchezhin GHSS, Lawspet, Puducherry.

S. Muralidharan, M.A., B.Ed.,
PG Asst.,
Jawahar Higher Secondary School, Ashok Nagar, Chennai.

O.V.S. Mallika, M.A., B.Ed., M.Phil.,
B.T. Asst.,
Kesari Hr. Sec. School, Mylapore, Chennai.

Coordinators

K. Chandrasekar,
Lecturer, DIET, Chennai.

R. Radjamohane, M.A., B.Ed.,
Lecturer in Hindi
Jeevanandam GHSS, Karamanikuppam,
Directorate of School Education, Puducherry.

Art and Design Team

Layout
Thy Designers

QC
Gopu Rasuvel
Rajesh Thangappan
Manohar Radhakrishnan
Jerald Wilson

Wrapper Design
Arun Kamaraj

Co-ordination
Ramesh Munisamy

Typist
S. Jayashree

This book has been printed on 80 GSM Elegant Maplitho paper.

Printed by offset at:

Unit 25.indd 101 06-07-2018 10:11:29

NOTES

Unit 25.indd 102 23-06-2018 11:29:37

NOTES

Unit 25.indd 102 23-06-2018 11:29:37

NOTES

Unit 25.indd 102 23-06-2018 11:29:37